'धनु' लग्न

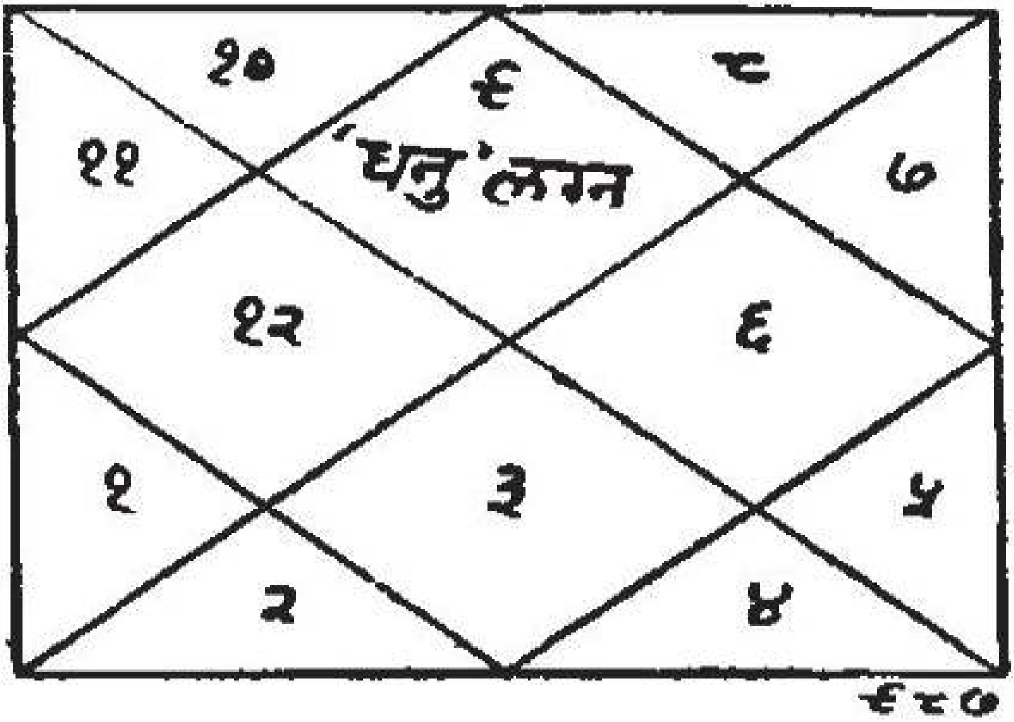

['धनु' लग्न की कुण्डलियों के विभिन्न भावों में स्थित विभिन्न ग्रहों के फलादेश का पृथक्-पृथक् वर्णन]

'धनु' लग्न का फलादेश

'धनु' लग्न में लग्न लेने वाला जातक पिंगलवर्ण, बड़े दाँतों वाला घोड़े-जैसी जाँघों वाला तथा सुन्दर स्वरूप वाला होता है। वह अत्यन्त कार्य-कुशल, प्रतिभाशाली, बुद्धिमान्, सतोगुणी, श्रेष्ठ स्वभाव वाला, सत्य-प्रतिज्ञ, पराक्रमी, तथा ऐश्वर्यवान् होता है।

ऐसा व्यक्ति यात्रा-प्रेमी, व्यवसायी, ब्राह्मण तथा देवताओं का भक्त, प्रेम के वश में रहने वाला, मित्रों के काम आने वाला, अनेक कलाओं का जानकार अथवा कवि तथा लेखक होता है। उसे घोड़े पालने का शौक भी होता है।

'धनु' लग्न में जन्म लेने वाला जातक बाल्यावस्था में अधिक सुख भोगता है, मध्यमावस्था में सामान्य जीवन व्यतीत करता है तथा अन्तिमावस्था में धन-धान्य पूर्ण होता है। २२ अथवा २३ वर्ष की आयु में उसे धन का विशेष लाभ होता है।

'धनु' लग्न वालों के अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित विभिन्न ग्रहों का स्थायी फलादेश आगे दी गई उदाहरण-कुण्डली संख्या ९८८ से १०९५ के बीच देखना चाहिए।

गोचर-कुण्डली के ग्रहों का फलादेश किन उदाहरण-कुण्डलियों में देखें, इसे आगे लिखे अनुसार समझ लेना चाहिए।

ॐ

'धनु' लग्न में 'सूर्य' का फलादेश

१. 'धनु' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'सूर्य' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ९८८ से ९९९ के बीच देखना चाहिए।

२. 'धनु' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'सूर्य' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में 'सूर्य'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ९८८
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ९८९
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ९९०
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ९९१
(च) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ९९२
(छ) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ९९३
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ९९४
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ९९५
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ९९६
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ९९७
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ९९८
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ९९९

'धनु' लग्न में 'चन्द्रमा' का फलादेश

१. 'धनु' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'चन्द्रमा' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १००० से १०११ के बीच देखना चाहिए।

२. 'धनु' लग्न वालों की गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित

'चन्द्रमा' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस दिन 'चन्द्रमा'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या १०००
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या १००१
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या १००२
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या १००३
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या १००४
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या १००५
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या १००६
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या १००७
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या १००८
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या १००९
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या १०१०
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या- १०११

'धनु' लग्न में 'मंगल' का फलादेश

१. 'धनु' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'मंगल' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १०१२ से १०२३ के बीच देखना चाहिए।

२. 'धनु' लग्नवालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'मंगल' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में 'मंगल'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या १०१२
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या १०१३
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या १०१४
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या १०१५
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या १०१६
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या १०१७
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या १०१८
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या १०१९
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या १०२०
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या १०२१
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या १०२२
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या १०२३

'धनु' लग्न में 'बुध' का फलादेश

१. 'धनु' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'बुध' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १०२४ से १०३५ के बीच देखना चाहिए।

२. 'धनु' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'बुध' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में 'बुध'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या १०२४
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या १०२५
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या १०२६
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या १०२७
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या १०२८
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या १०२९
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या १०३०
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या १०३१
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या १०३२
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या १०३३
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या १०३४
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या १०३५

'धनु' लग्न में 'गुरु' का फलादेश

१. 'धनु' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'गुरु' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १०३६ से १०४७ के बीच देखना चाहिए।

२. 'धनु' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'गुरु' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस वर्ष में 'बुध'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या १०३६
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या १०३७
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या १०३८
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या १०३९
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या १०४०

(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या १०४१
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या १०४२
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या १०४३
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या १०४४
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या १०४५
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या १०४६
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या १०४७

'धनु' लग्न में 'शुक्र' का फलादेश

१. 'धनु' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शुक्र' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १०४८ से १०५९ के बीच देखना चाहिए।

'धनु' लग्नवालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शुक्र' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में 'शुक्र'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या १०४८
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या १०४९
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या १०५०
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या १०५१
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या १०५२
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या १०५३
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या १०५४
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या १०५५
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या १०५६
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या १०५७
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या १०५८
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या १०५९

'धनु' लग्न में 'शनि' का फलादेश

१. 'धनु' लग्नवालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शनि' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ६२४ से ६३५ के बीच देखना चाहिए।

२. 'धनु' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शनि'

का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस वर्ष में 'शनि'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या १०६०
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या १०६१
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या १०६२
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या १०६३
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या १०६४
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या १०६५
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या १०६६
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या १०६७
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या १०६८
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या १०६९
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या १०७०
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या १०७१

'धनु' लग्न में 'राहु' का फलादेश

१ 'धनु' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'राहु' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १०७२ से १०८३ के बीच देखना चाहिए।

२. 'धनु' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'राहु' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस वर्ष में 'राहु'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या १०७२
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या १०७३
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या १०७४
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या १०७५
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या १०७६
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या १०७७
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या १०७८
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या १०७९
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या १०८०
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या १०८१
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या १०८२
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या १०८३

'धनु' लग्न में 'केतु' का फलादेश

१. 'धनु' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'केतु' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १०८४ से १०९५ के बीच देखना चाहिए।

२. 'धनु' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'केतु' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस वर्ष में 'केतु'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या १०८४
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या १०८५
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या १०८६
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या १०८७
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या १०८८
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या १०८९
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या १०९०
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या १०९१
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या १०९२
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या १०९३
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या १०९४
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या १०९५

'धनु' लग्न में सूर्य

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

धनु लग्न : प्रथमभाव : सूर्य

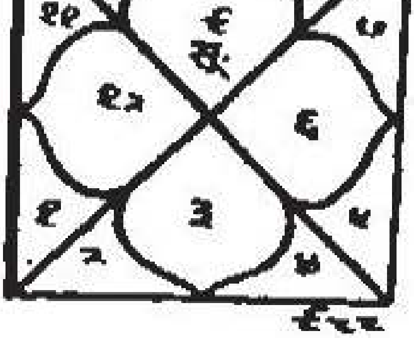

१०८८

केन्द्र तथा शरीर-स्थान में अपने मित्र 'गुरु' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक को उत्तम शक्तिशाली शरीर की प्राप्ति होती है। ऐसा व्यक्ति भाग्यशाली, धार्मिक रुचि वाला तथा आस्तिक होता है। सातवीं दृष्टि से बुध की राशि में सप्तमभाव को देखने से जातक को सुन्दर स्त्री का सहयोग और गृहस्थ-सुख प्राप्त होता है। साथ ही दैनिक व्यवसाय में लाभ भी होता है।

'धनु' लग्न को कुण्डली में 'द्वितीयभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

धनु लग्न : द्वितीयभाव : सूर्य

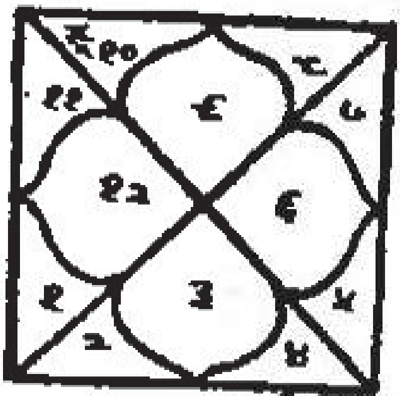

९२९

दूसरे भाव में शत्रु 'शनि' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक को कुछ कठिनाइयों के साथ धन-संग्रह में श्रेष्ठ सफलता मिलती है तथा कुछ मत-भेदों के साथ कुटुम्ब का सुख भी प्राप्त होता है। ऐसा व्यक्ति स्वार्थ-सिद्धि के लिए धर्म का पालन करता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से अष्टमभाव को देखने से जातक की आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ भी होता है। ऐसे व्यक्ति की भाग्योन्नति भी अच्छी होती है।

'धनु' लग्न की कुण्डली में 'तृतीयभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

धनु लग्न : तृतीयभाव : सूर्य

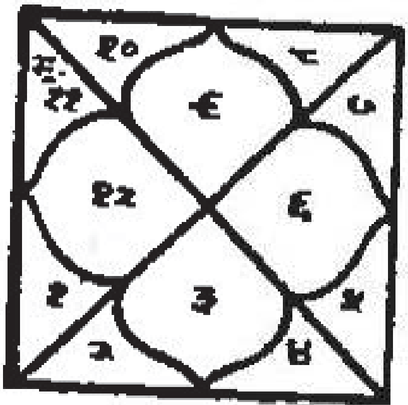

९३०

तीसरे भाव में शत्रु 'शनि' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक को भाई-बहिनों का सुख कुछ असंतोष के साथ मिलता है तथा पराक्रम में अत्यधिक वृद्धि होती है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में नवमभाव को देखने से पुरुषार्थ द्वारा भाग्य की अत्यधिक वृद्धि होती है, साथ ही धर्म का भी पालन होता है। ऐसा व्यक्ति बड़ा हिम्मती तथा यशस्वी होता है।

'धनु' लग्न की कुण्डली में 'चतुर्थभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

धनु लग्न : चतुर्थभाव : सूर्य

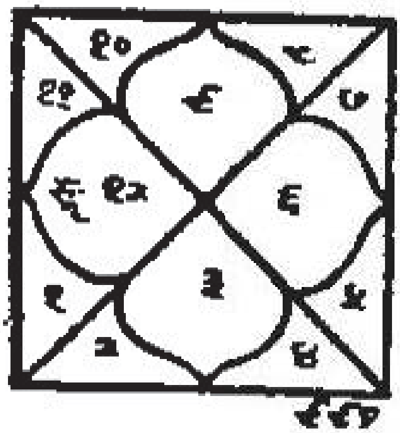

९३१

चौथे भाव में मित्र 'गुरु' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक को माता का सुख अधिक मिलता है तथा भूमि, भवन का सुख भी प्राप्त होता है। धर्म तथा भाग्य की उन्नति भी होती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सहयोग, सम्मान, लाभ तथा सफलता के अवसर भी प्राप्त होते रहते हैं।

'धनु' लग्न की कुण्डली में 'पंचमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

धनु लग्न : पंचमभाव : सूर्य

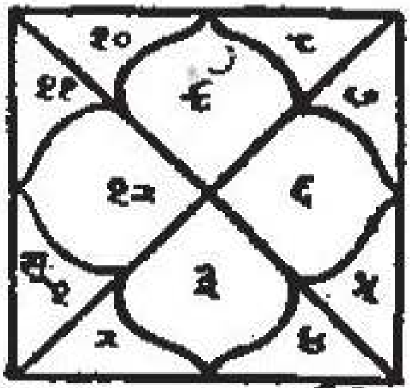

पाँचवें भाव में मित्र 'मंगल' की राशि पर स्थित उच्च के 'सूर्य' के प्रभाव से जातक को सन्तान, विद्या एवं बुद्धि का यथेष्ट लाभ होता है। ऐसा व्यक्ति बड़ा विद्वान्, धर्मात्मा, ज्ञानी तथा बुद्धिमान् होता है।

सातवीं नीच-दृष्टि से एकादशभाव को देखने से आमदनी के क्षेत्र में कठिनाइयाँ आती हैं। वाणी में सुप्रखरता तथा शिष्टाचार एवं सज्जनता में कमी होने के कारण आर्थिक उन्नति अधिक नहीं होती।

'धनु' लग्न की कुण्डली में 'षष्ठभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

धनु लग्न : षष्ठभाव : सूर्य

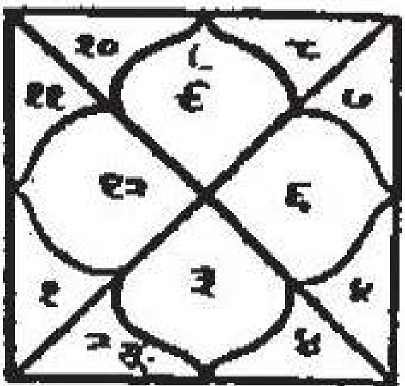

छठे भाव में शत्रु 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष पर अत्यधिक प्रभाव रखता है तथा झगड़े के मामलों से लाभ उठाता है। धर्म-पालन में विशेष रुचि नहीं होती।

बारहवें भाव में मित्र-दृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ मिलता है, जिसके कारण खर्च चलता है तथा भाग्य की वृद्धि भी होती है।

'धनु' लग्न की कुण्डली में 'सप्तमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

धनु लग्न : सप्तमभाव : सूर्य

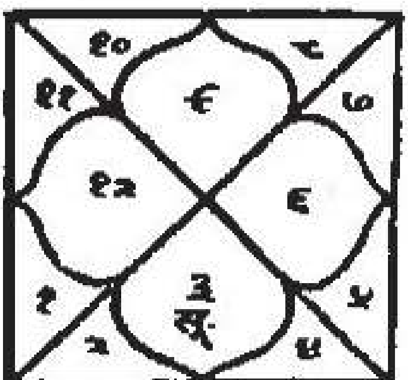

सातवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक को स्त्री-पक्ष से सुख मिलता है तथा दैनिक व्यवसाय में सफलताएँ मिलती रहती हैं। वह भाग्यशाली तथा ईश्वरभक्त भी होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से प्रथमभाव को देखने से श्रेष्ठ शारीरिक सुख एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व की प्राप्ति होती है।

ऐसे व्यक्ति की पत्नी कुछ तेज स्वभाव की होती है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

धनु लग्न : अष्टमभाव : सूर्य

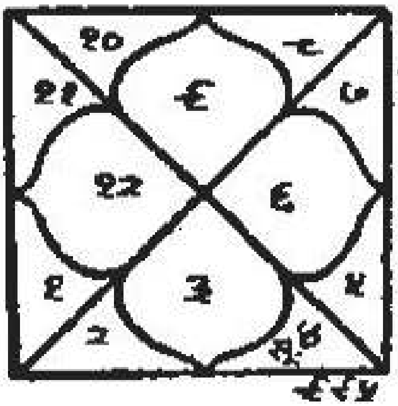

९९५

आठवें भाव में मित्र 'चंद्रमा' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक की आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। दैनिक जीवन प्रभावपूर्ण रहता है, परन्तु भाग्योन्नति में अनेक रुकावटें आती हैं।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन-संचय तथा कौटुम्बिक सुख के क्षेत्र में भी कुछ कमी रहती है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

धनु लग्न : नवमभाव : सूर्य

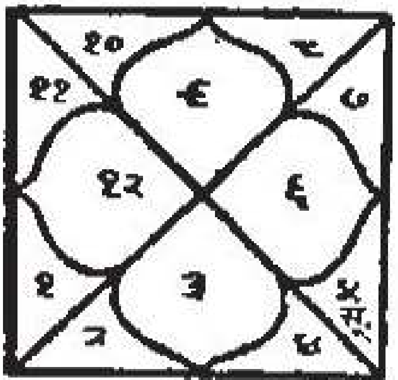

९९६

नवें भाव में स्वराशि-स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक के भाग्य तथा धर्म की विशेष उन्नति होती है। वह बड़ा यशस्वी तथा प्रभावशाली होता है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से तृतीयभाव को देखने से पराक्रम में कुछ कमी आती है तथा भाई-बहिनों के साथ कुछ मतभेद बना रहता है।

ऐसा व्यक्ति भाग्य पर आश्रित रहने वाला होता है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

धनु लग्न : दशमभाव : सूर्य

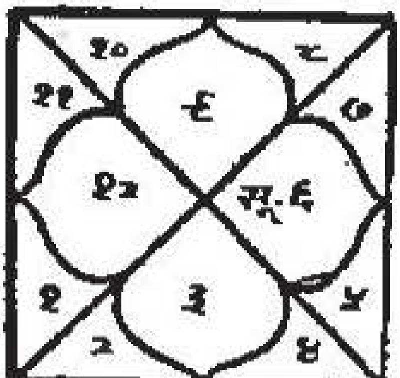

९९७

दसवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक को पिता द्वारा अत्यधिक सहयोग मिलता है तथा राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलताएँ प्राप्त होती हैं। ऐसा व्यक्ति बड़ा भाग्यवान् तथा आर्थिक विचारों का होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से जातक को माता, भूमि एवं भवन का यथेष्ट सुख मिलता है और यश तथा प्रतिष्ठा भी प्राप्त होती है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

धनु लग्न : एकादशभाव : सूर्य

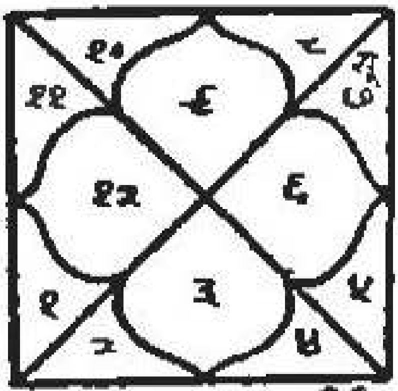

९९८

ग्यारहवें भाव में शत्रु 'शुक्र' की राशि पर स्थित नीच के सूर्य के प्रभाव से जातक की आमदनी में कुछ कठिनाइयों के साथ अच्छी वृद्धि होती है।

सातवीं मित्र तथा उच्च दृष्टि से पंचमभाव को देखने से विद्या, बुद्धि तथा सन्तान के क्षेत्र में भी पर्याप्त सफलता मिलती है।

ऐसा व्यक्ति गुणी, विद्वान्, सज्जन, मधुरभाषी तथा सुखी होता है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

धनु लग्न : द्वादशभाव : सूर्य

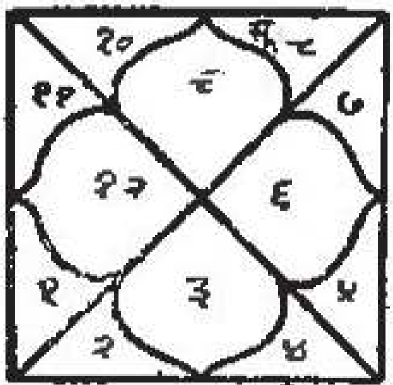

९९९

बारहवें भाव में मित्र 'मंगल' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से कुछ विलम्ब के साथ सफलता मिलती है और लाभ होता है। धर्म-पालन में रुचि अधिक नहीं होती, परन्तु धर्म तथा परोपकार में ही अधिक खर्च होता है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रुओं पर प्रभाव बना रहता है तथा शत्रु-पक्ष, झगड़े, मुकदमे आदि से लाभ एवं विजय की प्राप्ति भी होती है।

'धनु' लग्न में 'चन्द्रमा'

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

धनु लग्न : प्रथमभाव : चंद्र

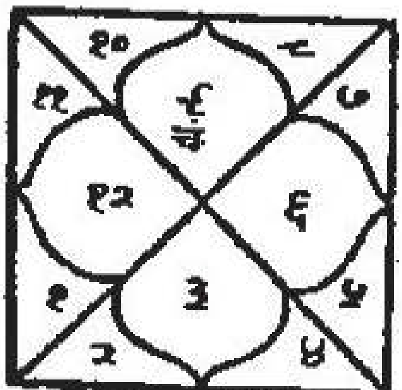

१०००

पहले भाव में मित्र 'गुरु' की राशि पर स्थित अष्टमेश 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक की आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। शरीर सुन्दर तथा स्वस्थ होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से कुछ कठिनाइयों के बाद स्त्री का सुख मिलता है तथा दैनिक आमदनी में भी जातक को कुछ कठिनाइयाँ आती रहती हैं।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

धनुलग्न : द्वितीयभाव : चंद्र

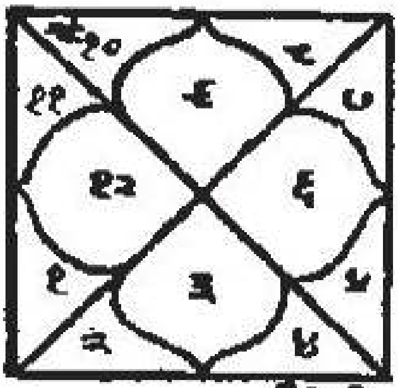

१००१

दूसरे भाव में शत्रु 'शनि' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक धन का संचय नहीं कर पाता तथा कौटुम्बिक सुख में भी कमी बनी रहती है, परन्तु रहन-सहन अमीरी ढंग का होता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व की वृद्धि होती है। मन में कुछ बेचैनी भी रहती है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

धनु लग्न : तृतीयभाव : चंद्र

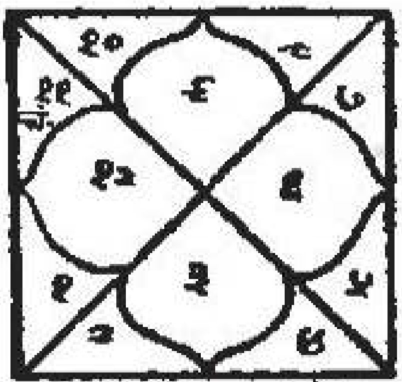

१००२

तीसरे भाव में शत्रु 'शनि' की राशि पर स्थित 'चंद्रमा' के प्रभाव से जातक को भाई-बहिन के सुख में कमी प्राप्त होती है तथा पराक्रम की वृद्धि के लिए विशेष प्रयत्न करना पड़ता है। आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से नवमभाव को देखने से कुछ कठिनाइयों के साथ भाग्य एवं धर्म की वृद्धि होती है। सामान्यतः जातक भाग्यशाली तथा संघर्ष-पूर्ण जीवन जीने वाला होता है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

धनु लग्न : चतुर्थभाव : चंद्र

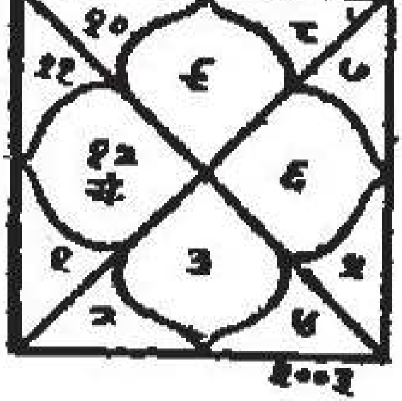

१००३

चौथे भाव में मित्र 'गुरु' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक को माता के सुख में कुछ कमी रहती है। उसे मातृभूमि से दूर जाकर भी रहना पड़ता है। आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। दैनिक जीवन प्रभावशाली बना रहता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'चंद्रमा' का फलादेश

धनु लग्न : पंचमभाव : चंद्र

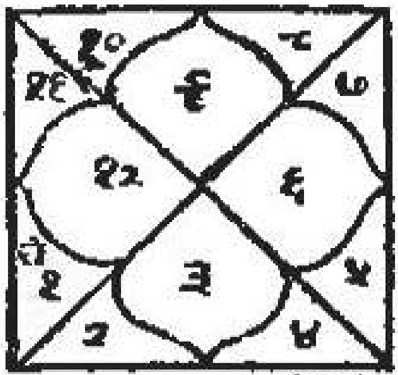

१००४

पाँचवें भाव में 'मंगल' की राशि पर स्थित अष्टमेश 'चंद्रमा' के प्रभाव से जातक की विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के क्षेत्र में कुछ कमियों का सामना करना पड़ता है। आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है, किन्तु मस्तिष्क में चिन्ताएँ भी रहती हैं।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से एकादश भाव को देखने से आमदनी के क्षेत्र में भी बड़ी कठिनाइयों के बाद सामान्य सफलता मिलती है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'चंद्रमा' का फलादेश

धनु लग्न : षष्ठभाव : चंद्र

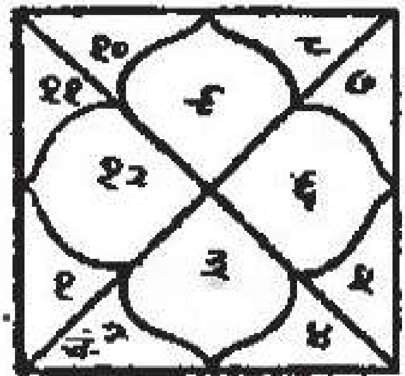

१००५

छठे भाव में शत्रु 'शुक्र' की राशि पर स्थित उच्च के 'चंद्रमा' के प्रभाव से जातक का शत्रु-पक्ष पर प्रभाव बना रहता है। आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ भी होता है।

सातवीं नीच-दृष्टि से द्वादश भाव को देखने से खर्च की परेशानी रहती है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध भी अच्छे सिद्ध नहीं होते।

ऐसे व्यक्ति को शत्रु-पक्ष के कारण कुछ मानसिक परेशानियाँ भी रहती हैं।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'चंद्रमा' का फलादेश

धनु लग्न : सप्तमभाव : चंद्र

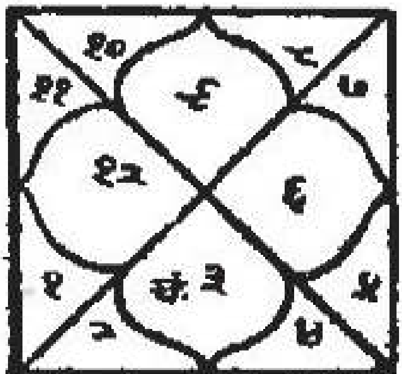

१००६

सातवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित अष्टमेश 'चंद्रमा' के प्रभाव से जातक को स्त्री-पक्ष से कष्ट मिलता है तथा दैनिक व्यवसाय में भी कठिनाइयाँ आती हैं। आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है तथा दैनिक जीवन भी कुछ आनन्दमय बना रहता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से प्रथम भाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य में वृद्धि होती है, परन्तु स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहता। थोड़े परिश्रम से ही थक जाया करता है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'चंद्रमा' का फलादेश

धनु लग्न : अष्टमभाव : चंद्र

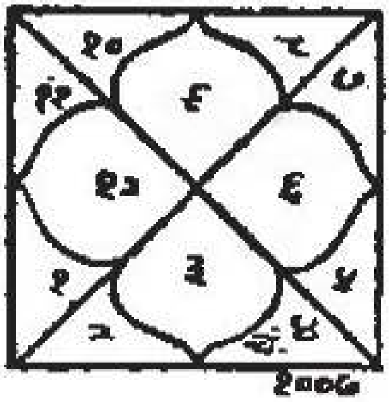

आठवें भाव में स्वराशि में स्थित 'चंद्रमा' के प्रभाव से जातक की आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का यथेष्ट लाभ होता है। दैनिक जीवन बड़े ठाठ-बाट का रहता है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से तृतीय भाव को देखने से धन के बारे में चिन्ताएं बनी रहती हैं तथा कौटुम्बिक सुख में भी कमी रहती है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

धनु लग्न : नवमभाव : चंद्र

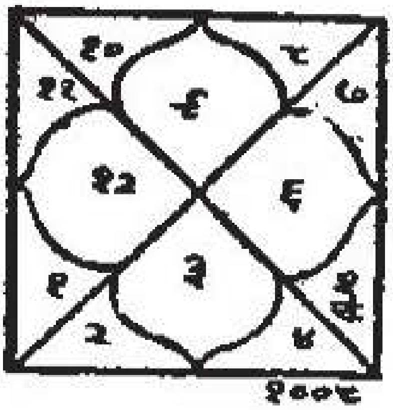

नवें भाव में मित्र 'सूर्य' की राशि पर स्थित 'चंद्रमा' के प्रभाव से जातक की भाग्योन्नति में कुछ परेशानियां आती हैं तथा यश भी कम मिल पाता है। धर्म का यथाविधि पालन नहीं होता। आयु तथा पुरातत्त्व में वृद्धि होती है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से तृतीय भाव को देखने से भाई-बहिनों से मतभेद रहता है तथा पराक्रम में भी यथोचित वृद्धि नहीं हो पाती। जीवन सामान्य ढंग से व्यतीत होता है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

धनु लग्न : दशमभाव : चंद्र

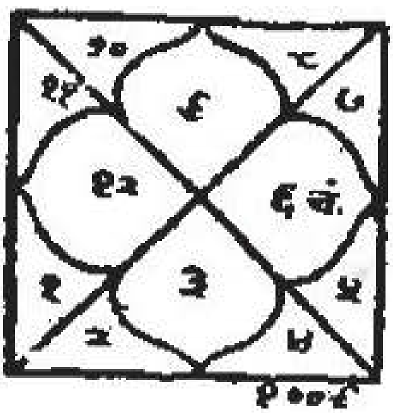

दसवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'चंद्रमा' के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयां आती हैं, परन्तु आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ होता है जिसके कारण जीवन ठाठ से बीतता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने से माता, भूमि एवं भवन का सुख कुछ कमी एवं परेशानी के साथ मिलता है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

धनु लग्न : एकादशभाव : चंद्र

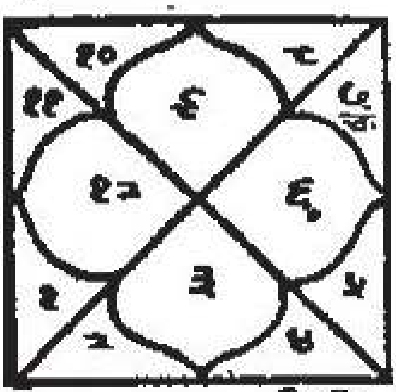

२०१०

ग्यारहवें भाव में शत्रु 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'चंद्रमा' के प्रभाव से जातक को कुछ परेशानियों के साथ लाभ होता है। आयु तथा पुरातत्व की श्रेष्ठ शक्ति प्राप्त होती है तथा दैनिक जीवन आनन्दपूर्ण बना रहता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से पंचम भाव को देखने से विद्या, बुद्धि एवं संतान के क्षेत्र में कुछ कमी रहती है तथा मस्तिष्क में चिन्ताएँ घिरी रहती हैं।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

धनु लग्न : द्वादशभाव : चंद्र

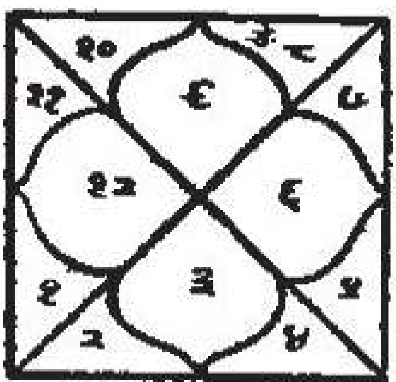

२०११

बारहवें भाव में मित्र 'मंगल' की राशि पर स्थित नीच के 'चंद्रमा' के प्रभाव के जातक को खर्च के बारे में बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से कष्ट मिलता है। आयु तथा पुरातत्व की भी हानि होती है। दैनिक-जीवन अशान्तिपूर्ण रहता है।

सातवीं उच्चदृष्टि से षष्ठ भाव को देखने से शत्रु-पक्ष पर प्रभाव स्थापित होता है तथा झगड़े-मुकदमों में सदैव विजय प्राप्त होती है।

'धनु' लग्न में 'मंगल'

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

धनु लग्न : प्रथमभाव : मंगल

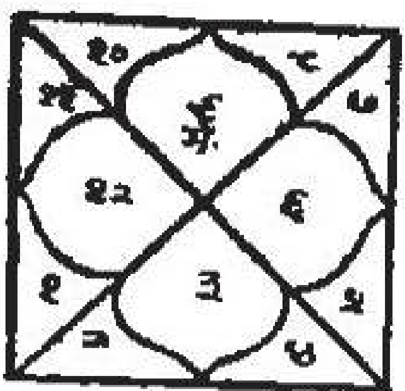

२०१२

पहले भाव में मित्र 'गुरु' की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक की शारीरिक शक्ति अच्छी रहती है तथा परिश्रमी भी होता है। विद्या, सन्तान तथा बाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है :

चौथी मित्र-दृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि, भवन का सुख कुछ कमी के साथ मिलता है। सातवीं मित्र-दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से कुछ कमी के साथ स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में लाभ होता है। आठवीं नीचदृष्टि से अष्टम-भाव को देखने से आयु एवं पुरातत्व का क्षेत्र कमजोर रहता है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

धनु लग्न : द्वितीयभाव : मंगल

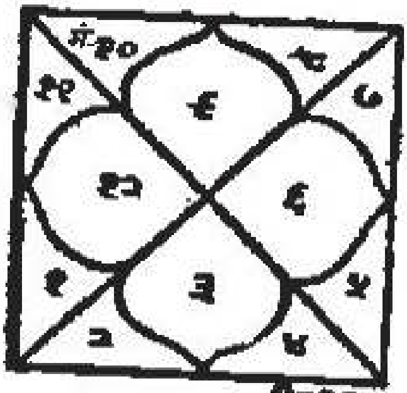

६०१३

दूसरे भाव में शत्रु 'शनि' की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक धन का सामान्य संचय करता है तथा उसे कौटुम्बिक सुख कुछ कमी के साथ मिलता है। चौथी दृष्टि से स्वराशि में पंचम भाव को देखने से विद्या तथा सन्तान की शक्ति प्राप्त होती है।

सातवीं नीच-दृष्टि से अष्टम भाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व के क्षेत्र में कमी रहती है। आठवीं मित्र-दृष्टि से नवमभाव को देखने से बड़ी कठिनाइयों के साथ भाग्योन्नति में थोड़ी-बहुत सफलता मिलती है तथा धर्म का पालन भी कम ही हो पाता है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

धनुलग्न : तृतीभाव : मंगल

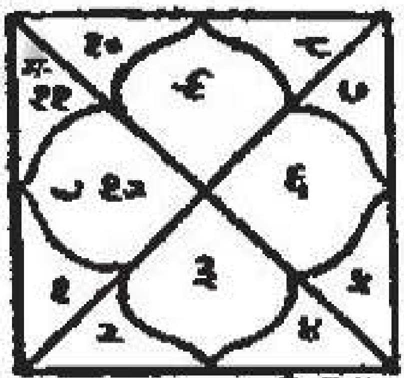

६०१४

तीसरे भाव में शत्रु 'शनि' की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक के पराक्रम में वृद्धि होती है तथा भाई-बहिन का सुख कुछ कमी के साथ मिलता है। विद्या तथा सन्तान-पक्ष भी कमजोर रहता है। चौथी शत्रु-दृष्टि से षष्ठ भाव को देखने से शत्रु पक्ष पर विजय मिलती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि के नवम भाव को देखने से भाग्य तथा धर्म की उन्नति होती है। आठवीं मित्र-दृष्टि से दशम भाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में न्यूनाधिक सफलता मिलती रहती है। जीवन में उतार-चढ़ाव आते रहते हैं।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

धनु लग्न : चतुर्थभाव : मंगल

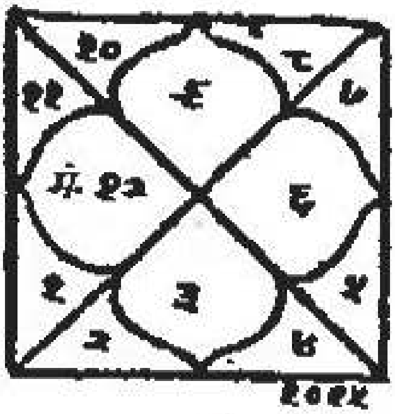

६०१५

चौथे भाव में मित्र 'गुरु' की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से माता, भूमि तथा भवन के सुख की हानि होती है। सन्तान तथा विद्या का पक्ष भी कमजोर रहता है। चौथी मित्र-दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री तथा दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों से काम चलता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से दशम भाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कमी के साथ सफलता मिलती है। आठवीं शत्रु-दृष्टि से एकादशभाव को देखने से बुद्धियोग के आमदनी बढ़ती है तथा बाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

धनु लग्न: पंचमभाव : मंगल

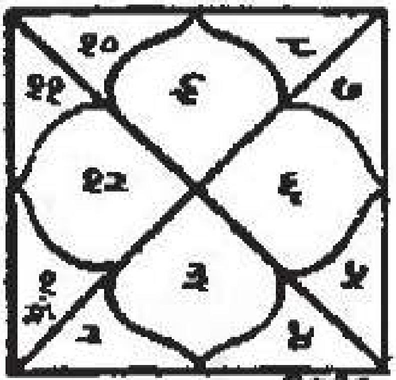

२०२६

पाँचवें भाव में स्वराशि-स्थित व्ययेश 'मंगल' के प्रभाव से जातक को कुछ परेशानियों के साथ विद्या एवं संतान के क्षेत्र में कुछ सफलता मिलती है। चौथी नीच-दृष्टि से मित्र राशि में अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पुरातत्व में कमी रहती है तथा उदर-विकार बना रहता है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से एकादश भाव को देखने से बुद्धियोग द्वारा आमदनी के क्षेत्र में कुछ सफलता मिलती है। आठवीं दृष्टि से स्वराशि में द्वादश भाव को देखने से खर्च अधिक रहता है, परन्तु बाहरी स्थानों से विशेष लाभ भी होता है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

धनुलग्न : षष्ठभाव : मंगल

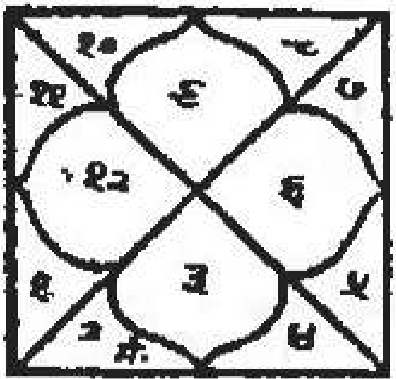

२०२७

छठे भाव में शत्रु 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक को शत्रु-पक्ष में सफलता मिलती है। परन्तु सन्तान तथा विद्या के क्षेत्र में कमी रहती है। चौथी मित्र-दृष्टि से नवम भाव को देखने से कुछ परेशानियों के साथ भाग्य एवं धर्म की वृद्धि होती है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में द्वादश भाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी संबन्धों में कठिनाइयाँ आती हैं। आठवीं मित्र-दृष्टि से प्रथम भाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य तथा स्वास्थ्य में कमी तथा मस्तिष्क में परेशानी रहती है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

धनुलग्न : सप्तमभाव : मंगल

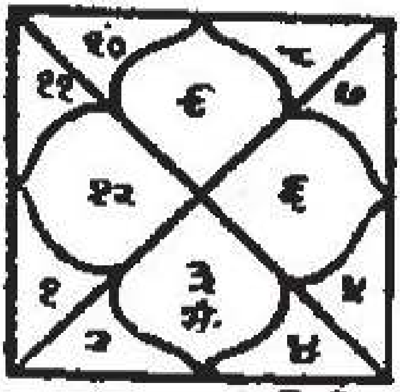

२०२८

सातवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक को स्त्री-पक्ष से कष्ट मिलता है तथा व्यवसाय में हानि होती है। बाहरी स्थानों से कुछ अच्छा संबंध रहता है, जिसके बल पर खर्च चलता रहता है। चौथी मित्र-दृष्टि से दशम भाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सामान्य सफलता मिलती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से प्रथम भाव को देखने से शरीर में कुछ कमजोरी रहती है। आठवीं उच्च-दृष्टि से द्वितीय भाव को देखने से धन तथा कुटुम्ब का अच्छा सुख प्राप्त होता है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

धनु लग्न : अष्टमभाव : मंगल

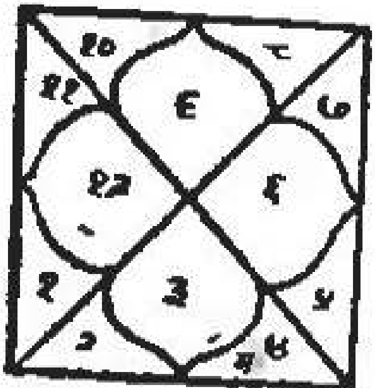

२०२९

आठवें भाव में मित्र 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित नीच के 'मंगल' के प्रभाव से जातक की आयु तथा पुरातत्त्व शक्ति में कमी आती है। पेट में विकार तथा मस्तिष्क में चिन्ताएँ रहती हैं। संतान पक्ष से कष्ट होता है तथा विद्या-पक्ष में कमजोरी रहती है। चौथी शत्रु-दृष्टि से एकादश भाव को देखने से कठिन परिश्रम द्वारा आमदनी में वृद्धि होती है। सातवीं उच्च-दृष्टि से द्वितीय भाव को देखने से धन-कुटुम्ब का सामान्य सुख मिलता है। आठवीं शत्रु-दृष्टि से तृतीय भाव को देखने से पराक्रम की वृद्धि होती है, परन्तु भाई-बहिनों से विरोध रहता है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

धनु लग्न : नवमभाव : मंगल

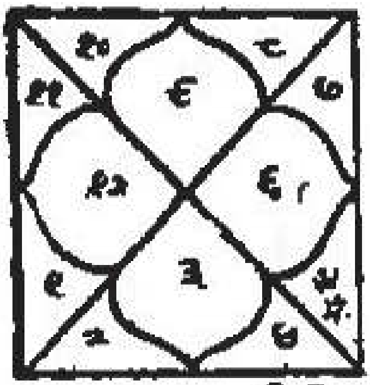

२०३०

नवें भाव में मित्र 'सूर्य' की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक के भाग्य तथा धर्म की उन्नति होती है। विद्या तथा सन्तान के क्षेत्र में भी कुछ कमी के साथ सफलता मिलती है। चौथी दृष्टि से स्वराशि में द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी संबन्धों से खर्च चलता है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से तृतीय भाव को देखने से भाई-बहिनों से विरोध रहता है तथा पराक्रम में कमी आती है। आठवीं मित्र-दृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि तथा भवन का सुख कुछ कमी के साथ मिलता है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

धनु लग्न : दशमभाव : मंगल

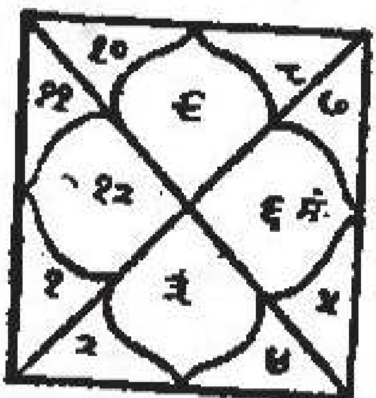

२०३१

दसवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक को राज्य के क्षेत्र में बुद्धियोग से सफलता मिलती है तथा पिता एवं व्यवसाय के क्षेत्र में हानि रहती है। चौथी मित्र-दृष्टि से प्रथम भाव को देखने के शारीरिक सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य में कमी रहती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि एवं भवन का सुख कुछ कमी के साथ मिलता है। आठवीं दृष्टि से स्वराशि में पंचम भाव को देखने से विद्या, बुद्धि का श्रेष्ठ लाभ होता है, परन्तु सन्तान-पक्ष फिर भी कमजोर रहता है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'एकादश भाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

धनुलग्न : एकादश भाव : मंगल

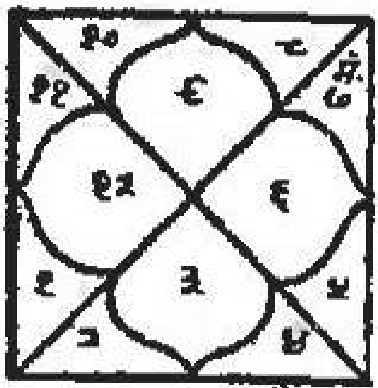

२०२२

ग्यारहवें भाव में शत्रु 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक की आमदनी में पर्याप्त वृद्धि होती है। खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्धों से कुछ कठिनाई के साथ लाभ होता है। चौथी उच्च दृष्टि से शत्रुराशि में द्वितीय भाव को देखने से धन-संचय के लिए कठिन परिश्रम करना पड़ता है तथा कुटुम्ब का सुख प्राप्त होता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में पंचम भाव को देखने से विद्या एवं सन्तान पक्ष से लाभ होता है। आठवीं शत्रु-दृष्टि से षष्ठ भाव को देखने से शत्रु-पक्ष पर प्रभाव रहता है तथा झगड़ों में विजय एवं लाभ की प्राप्ति होती है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

धनुलग्न : द्वादशभाव : मंगल

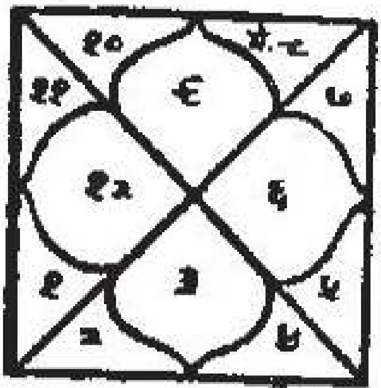

२०२३

बारहवें भाव में स्वराशि में स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है। सन्तान तथा विद्या-पक्ष में कमी रहती है। चौथी शत्रु-दृष्टि से द्वितीय भाव को देखने से भाई-बहिनों से विरोध रहता है, परन्तु पराक्रम की वृद्धि होती है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से षष्ठ भाव को देखने से शत्रुओं पर विजय प्राप्त होती है तथा झगड़ों से लाभ होता है। आठवीं मित्र-दृष्टि से सप्तम भाव को देखने से स्त्री-पक्ष से कष्ट मिलता है तथा व्यवसाय में कठिनाइयां आती रहती हैं।

'धनु' लग्न में 'बुध'

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

धनुलग्न : प्रथमभाव : बुध

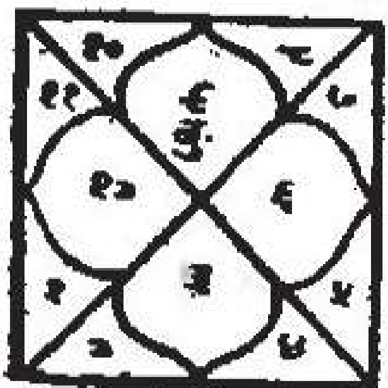

२०२४

पहले भाव में मित्र 'गुरु' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक को श्रेष्ठ शारीरिक तथा विवेकशक्ति प्राप्त होती है। पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलता मिलती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से स्वराशि में सप्तम भाव को देखने से सुन्दर पत्नी मिलती है तथा ससुराल से यथेष्ट धन भी प्राप्त होता है। दैनिक आमदनी भी बहुत अच्छी रहती है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

धनु लग्न : द्वितीयभाव : बुध

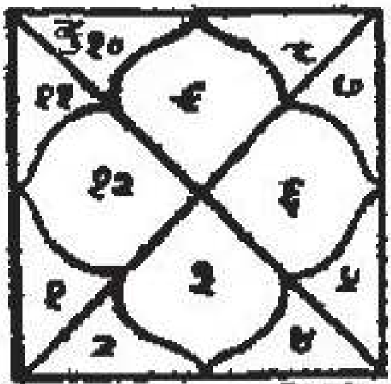

१०२५

दूसरे भाव में मित्र 'शनि' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक को धन तथा कुटुम्ब का विशेष सुख मिलता है। पिता, राज्य तथा व्यवसाय से भी लाभ होता है परन्तु स्त्री-सुख में कमी रहती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से अष्टम भाव को देखने आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। दैनिक जीवन उल्लासपूर्ण एवं शानदार बना रहता है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

धनु लग्न : तृतीयभाव : बुध

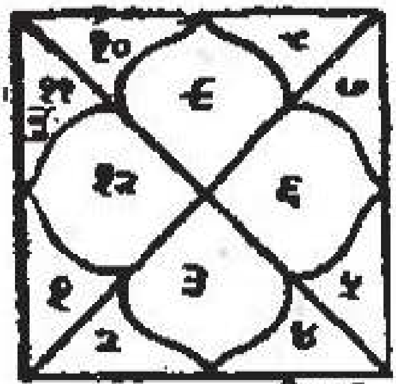

१०२६

तीसरे भाव में मित्र 'शनि की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक के पराक्रम की वृद्धि होती है तथा भाई-बहिनों का यथेष्ट सुख मिलता है। अपनी विवेक-बुद्धि से उसे प्रत्येक क्षेत्र में सफलता मिलती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से नवम भाव को देखने से भाग्य तथा धर्म की वृद्धि होती रहती है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

धनु लग्न: चतुर्थभाव: बुध

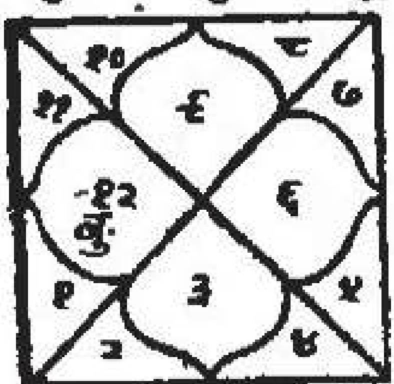

१०२७

चौथे भाव में मित्र 'गुरु' की राशि पर स्थित नीच के 'बुध' के प्रभाव से जातक की माता, भूमि एवं भवन के सुख में कमी प्राप्त होती है। स्त्री तथा गृहस्थी के सुख में भी कठिनाइयां आती हैं।

सातवीं उच्च दृष्टि से स्वराशि में दशम भाव को देखने से कुछ कठिनाइयों के साथ पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में शक्ति एवं सफलता प्राप्त होती है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

धनु लग्न : पंचमभाव : बुध

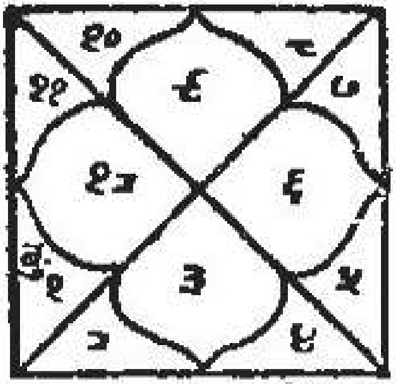

१०२८

पाँचवें भाव में मित्र 'मंगल' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक की विद्या, बुद्धि तथा सन्तान का श्रेष्ठ लाभ होता है। स्त्री, गृहस्थी, पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी उन्नति होती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से एकादश भाव को देखने से आमदनी खूब होती है। ऐसा व्यक्ति वार्तालाप करने में बड़ा चतुर, बुद्धिमान तथा यशस्वी भी होता है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

धनु लग्न : षष्ठभाव : बुध

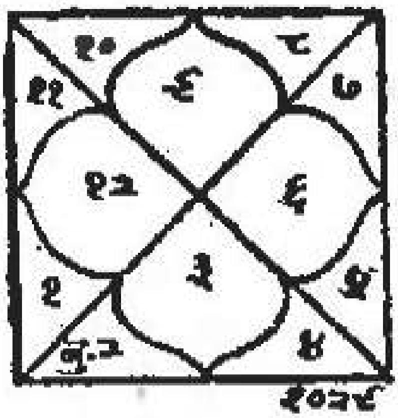

१०२९

छठे भाव में मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक को शत्रु-पक्ष में सफलता मिलती है, परन्तु पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में हानि उठानी पड़ती है। नाना के पक्ष से लाभ होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा उसे बाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

धनु लग्न : सप्तमभाव : बुध

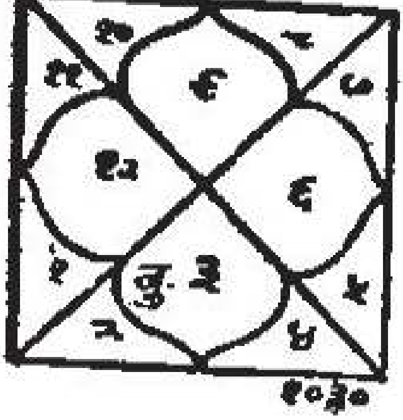

१०३०

सातवें भाव में स्वराशि स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक को सुन्दर स्त्री मिलती है तथा स्त्री-पक्ष से लाभ भी होता है। दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलता मिलती है। राज्य एवं विद्या से भी सहयोग तथा सम्मान मिलता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से प्रथम भाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य तथा प्रभाव में वृद्धि होती है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

धनुलग्न : अष्टमभाव : बुध

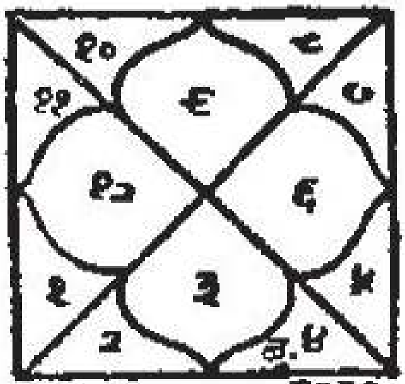

६०३१

आठवें भाव में शत्रु 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक को आयु तथा पुरातत्त्व की शक्ति प्राप्त होती है। परंतु पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कभी-कभी बड़े घाटे तथा कठिनाइयों का सामना करना होता है। सामान्य रहन-सहन शानदार रहता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से द्वितीय भाव को देखने के धन तथा कुटुम्ब की वृद्धि के लिए विशेष परिश्रम करना पड़ता है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

धनुलग्न : नवमभाव : बुध

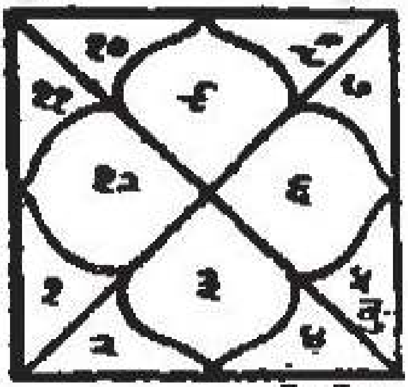

६०३२

नवें भाव में मित्र 'सूर्य' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक अत्यधिक भाग्यवान् तथा धर्मात्मा होता है। पिता, राज्य, व्यवसाय तथा स्त्री-पक्ष में भी उसे अत्यन्त सफलता मिलती है। अपनी विवेक-बुद्धि से वह यथेष्ट धन तथा सम्मान अर्जित करता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से तृतीय भाव को देखने से भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम की भी अत्यधिक वृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति बहुत सुखी जीवन बिताता है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

धनुलग्न : दशमभाव : बुध

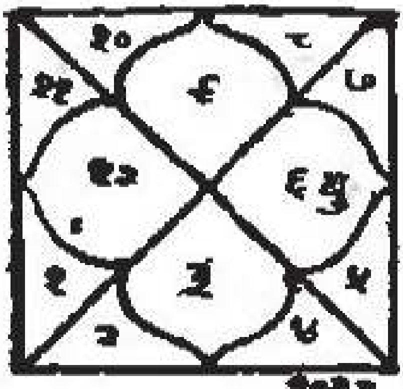

६०३३

दसवें भाव में स्वराशि-स्थित उच्च के बुध के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में अत्यधिक सफलताएँ मिलती हैं। उसे पर्याप्त यश, धन तथा सम्मान प्राप्त होता है।

सातवीं नीच-दृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने के माता के सुख में कमी रहती है तथा भूमि, भवन के सुख में भी कुछ कठिनाइयाँ आती हैं।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

धनुलग्न : एकादशभाव : बुध

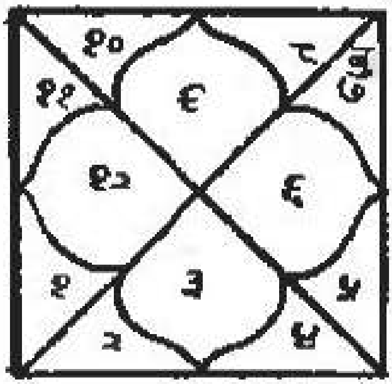

२०३५

ग्यारहवें भाव में मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक की आमदनी खूब होती है। पिता, राज्य, व्यवसाय तथा स्त्री-पक्ष में भी पर्याप्त सुख, यश, धन, लाभ तथा सम्मान प्राप्त होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से पंचम भाव को देखने से विद्या, बुद्धि एवं सन्तान का सुख भी यथेष्ट मिलता है। ऐसा व्यक्ति धनी, सुखी, विद्वान् तथा यशस्वी होता है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

धनुलग्न : द्वादशभाव : बुध

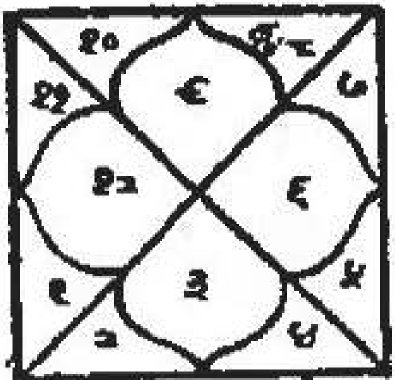

२०३५

बारहवें भाव में मित्र 'मंगल' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है, परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्धों से लाभ प्राप्त होता है। पिता, राज्य तथा स्त्री के सुख की हानि होती है। जन्म-स्थान में रहकर व्यवसाय करने से घाटा होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से षष्ठ भाव को देखने से शत्रु-पक्ष एवं झगड़े-मुकद्दमे के मामलों में सफलता होती है।

'धनु' लग्न में 'गुरु'

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

धनुलग्न : प्रथमभाव : गुरु

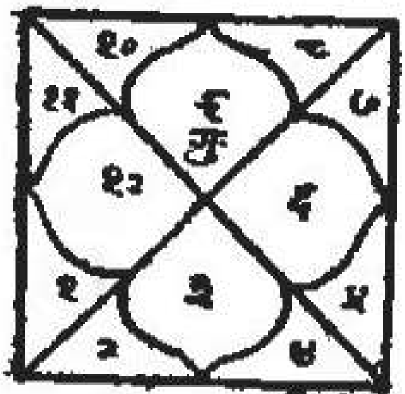

२०३६

पहले भाव में स्वराशि में स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक को शारीरिक सौन्दर्य एवं सुख की प्राप्ति होती है। भूमि तथा भवन का सुख भी मिलता है। पाँचवीं मित्र-दृष्टि से पंचम भाव को देखने से विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के क्षेत्र में भी सफलता मिलती है। सातवीं मित्र-दृष्टि से सप्तम भाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय का सुख भी मिलता है। नवीं मित्र-दृष्टि से नवम भाव को देखने से भाग्य तथा धर्म की उन्नति होती है।

ऐसा व्यक्ति विद्वान्, गुणी, सुन्दर, धनी, धर्मात्मा, मधुरभाषी, सज्जन तथा आनन्दी होता है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

धनु लग्न: द्वितीयभाव : गुरु

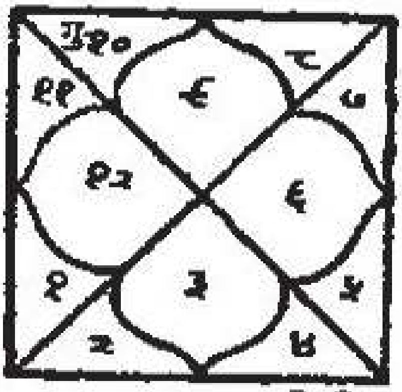

१०३७

दूसरे भाव में शत्रु 'शनि' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक के धन तथा कुटुम्ब-सुख की हानि होती है। शारीरिक सुख तथा सौन्दर्य में भी कमी आती है। माता, भूमि तथा भवन का पक्ष भी कमजोर रहता है। पाँचवीं शत्रुदृष्टि से षष्ठ भाव को देखने से शत्रु-पक्ष में प्रभाव स्थापित होता है तथा झगड़े के मामलों में बुद्धिमानी से सफलता मिलती है। सातवीं उच्च-दृष्टि से अष्टम भाव को देखने से आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ होता है।

नवीं मित्र-दृष्टि से दशम भाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सुख, सम्मान, यश तथा सफलता की प्राप्ति होती है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

धनु लग्न : तृतीयभाव : गुरु

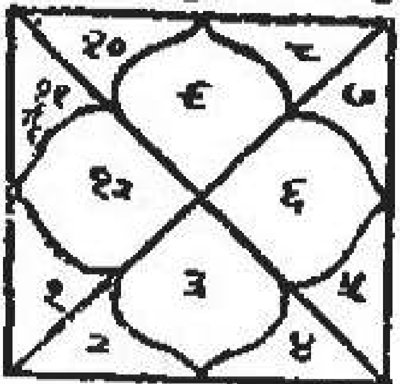

१०३८

तीसरे भाव में शत्रु 'शनि' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक को कुछ मतभेद के साथ भाई-बहिन का सुख प्राप्त होता है तथा पराक्रम में भी कमी आती है। भूमि, भवन तथा माता का सामान्य सुख मिलता है। पाँचवीं मित्र-दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री सुन्दर मिलती है तथा स्त्री से सुख और व्यवसाय में सफलता मिलती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से नवम भाव को देखने से भाग्य तथा धर्म की वृद्धि होती है। नवीं शत्रु-दृष्टि से एकादश भाव को देखने से आमदनी के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती रहती है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

धनु लग्न : चतुर्थभाव : गुरु

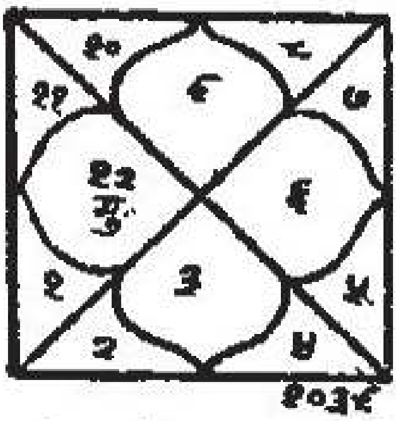

१०३९

चौथे भाव में स्वराशि में स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक को माता, भूमि तथा भवन का श्रेष्ठ सुख मिलता है। शारीरिक सौन्दर्य एवं प्रभाव की प्राप्ति भी होती है। पाँचवीं उच्च तथा मित्र-दृष्टि से अष्टम भाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व की वृद्धि होती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से दशम भाव को देखने से पिता से सुख, राज्य से सम्मान तथा व्यवसाय से लाभ होता है। नवीं मित्र-दृष्टि से द्वादश भाव को देखने से खर्च अच्छी तरह चलता है तथा बाहरी स्थानों से लाभ होता है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

धनुलग्न : पंचमभाव : गुरु

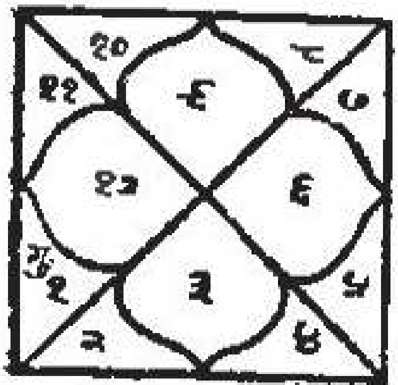

१०५०

पाँचवें भाव में मित्र 'मंगल' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक को विद्या, बुद्धि तथा सन्तान-पक्ष में सफलता मिलती है। पाँचवीं मित्रदृष्टि से नवम भाव को देखने से भाग्य तथा धर्म की वृद्धि होती है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से एकादश भाव को देखने से आमदनी के क्षेत्र में कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है। नवीं दृष्टि से स्वराशि में प्रथम भाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य, स्वास्थ्य, प्रतिष्ठा तथा प्रभाव की प्राप्ति होती है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

धनुलग्न : षष्ठभाव : गुरु

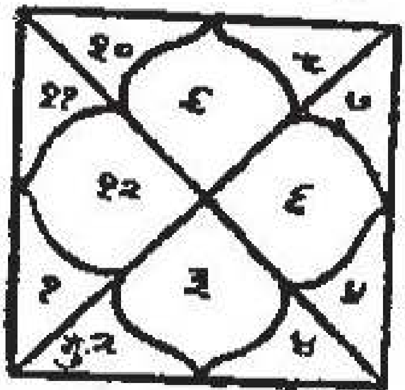

१०५१

छठे भाव में शत्रु 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक को शत्रु-पक्ष तथा रोगादि से परेशानी होती है तथा बुद्धि-बल से उनका निराकरण होता है। शारीरिक सौन्दर्य तथा स्वास्थ्य में भी कमी आती है। माता का अल्प सुख होता है तथा भूमि एवं भवन का सुख प्राप्त नहीं होता। पाँचवी मित्रदृष्टि से दशम भाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में लाभ, सुख तथा सम्मान की प्राप्ति होती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से द्वादश भाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी संबंधों से सुख मिलता है। नवीं नीचदृष्टि से तृतीयभाव को देखने से धन तथा कुटुम्ब की ओर से परेशानी रहती है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

धनुलग्न : सप्तमभाव : गुरु

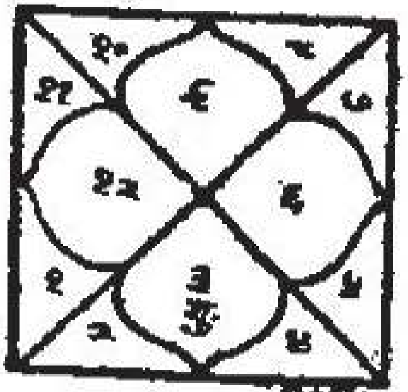

१०५२

सातवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक को स्त्री-पक्ष से सुख एवं सौन्दर्य तथा व्यवसाय में सफलता प्राप्त होती है। माता, भूमि तथा भवन का सुख भी मिलता है। श्रेष्ठ पाँचवीं शत्रुदृष्टि से एकादश भाव को देखने से आमदनी के क्षेत्र में कुछ असंतोष रहता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में प्रथमभाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य, स्वास्थ्य एवं स्वाभिमान की प्राप्ति होती है। नवीं शत्रुदृष्टि से तृतीय भाव को देखने से भाई-बहिनों से असन्तोष रहता है तथा पराक्रम में भी कुछ कमी आती है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

धनुलग्न : अष्टमभाव : गुरु

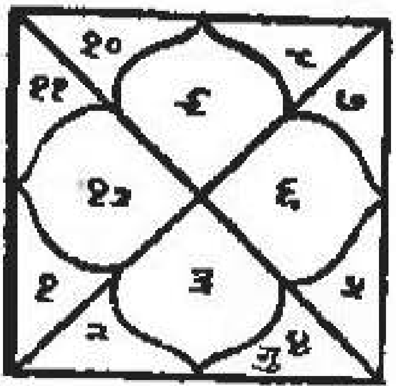

२०४३

आठवें भाव में मित्र 'चन्द्रमा' की राशि में स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक को आयु तथा पुरातत्त्व को श्रेष्ठ शक्ति का लाभ होता है। परन्तु शारीरिक सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य में कमी आती है। पाँचवीं मित्रदृष्टि से द्वादश भाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थान के संबंधों से लाभ मिलता है।

सातवीं नीच तथा शत्रुदृष्टि से द्वितीय भाव को देखने से धन तथा कुटुम्ब के सुख में कमी आती है। नवीं दृष्टि से स्वराशि में चतुर्थ भाव को देखने से माता, भूमि एवं भवन का सुख कुछ कमी के साथ प्राप्त होता है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

धनुलग्न : नवमभाव : गुरु

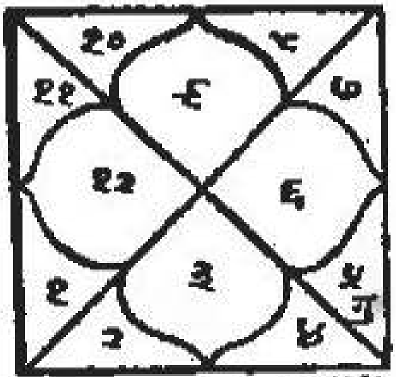

२०४४

नवें भाव में मित्र 'सूर्य' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक के भाग्य की अत्यधिक वृद्धि होती है तथा धर्म का यथाविधि पालन होता है। माता, भूमि तथा भवन का सुख भी मिलता है। पाँचवीं दृष्टि से स्वराशि में प्रथमभाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य, स्वास्थ्य एवं यश की प्राप्ति होती है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से तृतीय भाव को देखने से भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में कमी आती है। नवीं मित्रदृष्टि से पंचम भाव को देखने से सन्तान-पक्ष से सुख मिलता है तथा विद्या एवं बुद्धि की वृद्धि होती है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

धनुलग्न : दशमभाव : गुरु

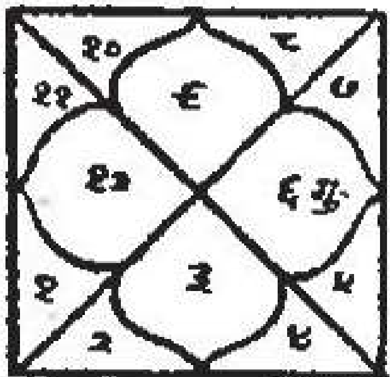

२०४५

दसवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सुख, लाभ, सम्मान तथा सहयोग प्राप्त होता है। शारीरिक सौन्दर्य एवं स्वाभिमान की प्राप्ति भी होती है। पाँचवीं नीच तथा शत्रुदृष्टि से द्वितीय भाव को देखने से धन तथा कुटुम्ब पक्ष से असन्तोष रहता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में चतुर्थ भाव को देखने से माता, भूमि एवं भवन का सुख प्राप्त होता है। नवीं शत्रुदृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रु-पक्ष में बड़ी होशियारी से प्रभाव स्थापित होता है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

धनु लग्न : एकादशभाव : गुरु

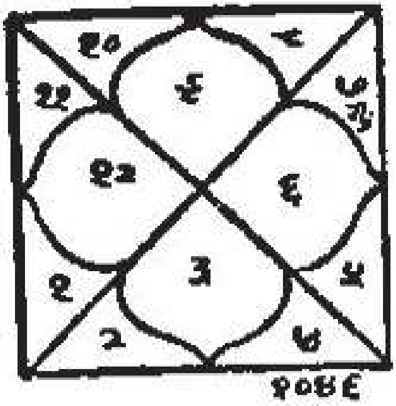

ग्यारहवें भाव में शत्रु 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक शारीरिक श्रम द्वारा अपनी आय को बढ़ाता है। उसे माता, भूमि एवं भवन का सुख भी प्राप्त होता है। पाँचवीं शत्रुदृष्टि से तृतीय भाव को देखने से भाई-बहनों से असन्तोष रहता है तथा पराक्रम की वृद्धि भी नहीं हो पाती।

सातवीं मित्रदृष्टि से पंचमभाव को देखने से विद्या, बुद्धि एवं सन्तान का लाभ होता है। नवीं मित्रदृष्टि से सप्तम भाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में लाभ की प्राप्ति होती है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

धनु लग्न : द्वादशभाव : गुरु

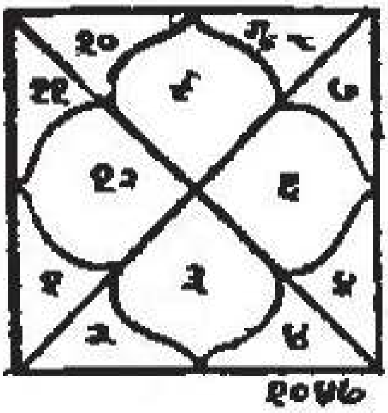

बारहवें भाव में मित्र 'मंगल' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी संबंधों से लाभ होता है। शरीर में कुछ कमजोरी भी रहती है। पाँचवीं दृष्टि से स्वराशि में चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि एवं भवन का सुख प्राप्त होता है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से षष्ठ भाव को देखने से शत्रु-पक्ष में बुद्धिमानी से प्रभाव स्थापित होता है। नवीं उच्च तथा मित्रदृष्टि से अष्टम भाव को देखने से आयु की वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। ऐसे व्यक्ति का दैनिक जीवन भाव से बीतता है।

'धनु' लग्न में 'शुक्र'

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

धनु लग्न : प्रथमभाव : शुक्र

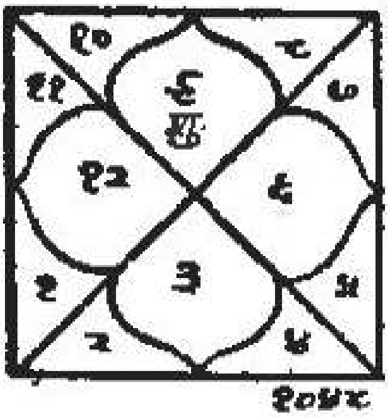

पहले भाव में शत्रु 'गुरु' की राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक का स्वास्थ्य कुछ कमजोर रहता है, परन्तु परिश्रमी तथा चतुर होता है। शत्रु-पक्ष पर विजय मिलती है। यशस्वी भी होता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से सप्तम भाव को देखने से स्त्री से कुछ मतभेद-युक्त सुख मिलता है तथा दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में चतुराई द्वारा सफलता एवं लाभ की प्राप्ति होती है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

धनुलग्न : द्वितीयभाव : शुक्र

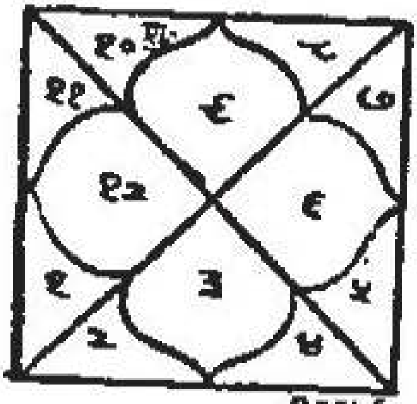

१०४९

दूसरे भाव में मित्र 'शनि' की राशि पर स्थित स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक को धन की अच्छी शक्ति मिलती है, परन्तु कुटुम्बियों से मतभेद रहता है। शत्रु-पक्ष से लाभ होता है तथा उस पर प्रभाव भी स्थापित होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से अष्टम भाव को देखने से आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति में वृद्धि होती है।

ऐसा व्यक्ति प्रभावशाली तथा प्रतिष्ठित होता है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

धनुलग्न : तृतीयभाव : शुक्र

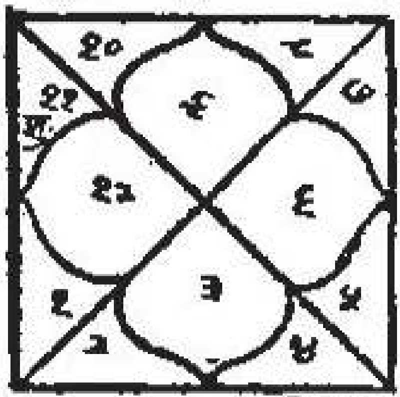

१०५०

तीसरे भाव में मित्र 'शनि' की राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक के पराक्रम में वृद्धि होती है तथा कुछ कमी के लाभ भाई-बहिनों का सुख भी मिलता है। धन का लाभ होता है तथा शत्रु-पक्ष पर प्रभाव बना रहता है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से नवमभाव को देखने से भाग्योन्नति में कठिनाइयाँ आती हैं तथा धर्म में भी विशेष रुचि नहीं रहती। सामान्यतः जीवन सुखी बना रहता है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

धनु लग्न : चतुर्थभाव : शुक्र

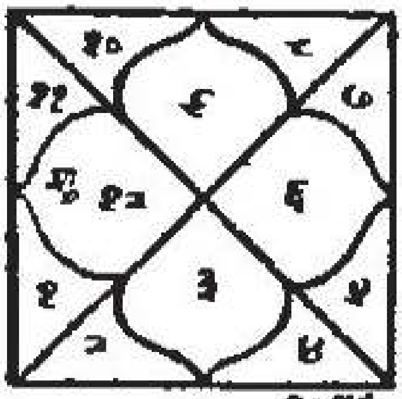

१०५१

चौथे भाव में शत्रु 'गुरु' की राशि पर स्थित उच्च 'शुक्र' के प्रभाव से जातक को माता, भूमि एवं भवन का श्रेष्ठ सुख प्राप्त होता है। आमदनी अच्छी रहती है तथा शत्रु-पक्ष पर विजय प्राप्त होती है।

सातवीं नीच-दृष्टि से दशम भाव को देखने से पिता से हानि तथा राज्य के क्षेत्र में असफलता मिलती है। व्यवसाय की उन्नति के मार्ग में भी अनेक कठिनाइयाँ आती हैं।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

धनुलग्न : पंचमभाव : शुक्र

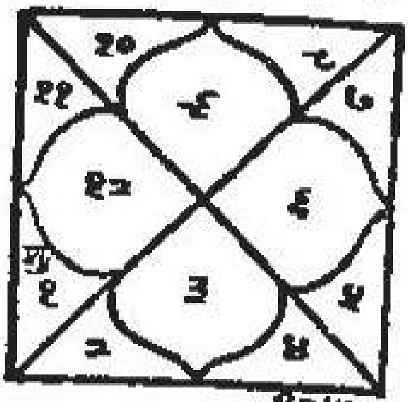

१०५२

पाँचवें भाव में शत्रु 'मंगल' को राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव के जातक को विद्या, बुद्धि का श्रेष्ठ लाभ होता है, परन्तु सन्तान-पक्ष में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है। वाणी की शक्ति, चातुर्य एवं कला का लाभ भी होता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में एकादश भाव को देखने से विद्या-बुद्धि द्वारा आमदनी की वृद्धि होती है तथा शत्रु-पक्ष पर विजय प्राप्त होती है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

धनुलग्न : षष्ठभाव : शुक्र

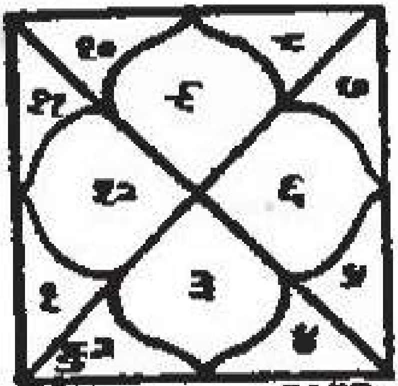

१०५३

षष्ठ भाव में स्वराशि-स्थित 'शुक्र' के प्रभाव के जातक शत्रु-पक्ष पर भारी प्रभाव रखता है तथा झगड़ों से लाभ उठाता है। परिश्रम द्वारा धन एवं आमदनी के क्षेत्र में भी अच्छी सफलता मिलती है। ननसाल-पक्ष से भी लाभ होता है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से कुछ कठिनाइयों के साथ अच्छा लाभ होता रहता है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

धनुलग्न : सप्तमभाव : शुक्र

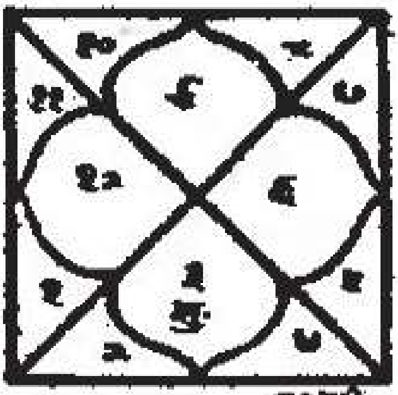

१०५४

सातवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को स्त्री-पक्ष से कुछ मतभेद-युक्त लाभ मिलता है। व्यवसाय क्षेत्र में भी कठिनाइयों के साथ लाभ प्राप्त होता है। शत्रुपक्ष पर प्रभाव स्थापित होता है तथा मूत्रेन्द्रिय में विकार की संभावना भी रहती है।

सातवीं मित्रदृष्टि के प्रथम भाव को देखने से शारीरिक शक्ति एवं प्रभाव की प्राप्ति होती है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

धनुलग्न : अष्टमभाव : शुक्र

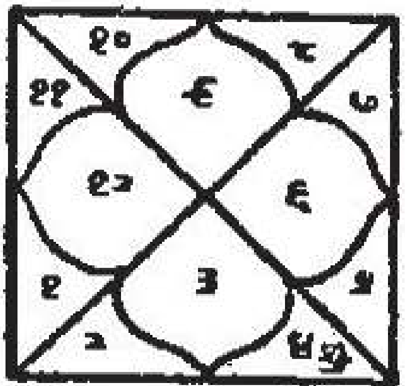

१०५५

आठवें भाव में शत्रु 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक की आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्व का लाभ भी होता है। आमदनी के मार्ग में कठिनाइयां आती हैं। बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से परिश्रम द्वारा लाभ मिलता है। शत्रुपक्ष से भी परेशानी होती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से द्वितीय भाव को देखने से कुटुम्ब का सहयोग प्राप्त होता है तथा धन-वृद्धि के लिए विशेष परिश्रम करना पड़ता है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

धनुलग्न : नवमभाव : शुक्र

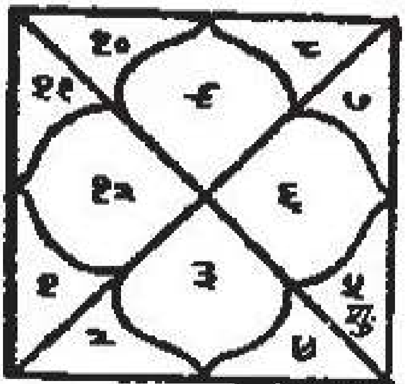

१०५६

नवें भाव में शत्रु 'सूर्य' की राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक को भाग्योन्नति के लिए विशेष परिश्रम करना पड़ता है। तथा धर्म में भी कम श्रद्धा रहती है। अपनी चतुराई द्वारा शत्रु-पक्ष से लाभ भी उठाता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से तृतीय भाव को देखने से भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में वृद्धि होती है।

ऐसा व्यक्ति भाग्यवान् समझा जाता है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

धनुलग्न : दशमभाव : शुक्र

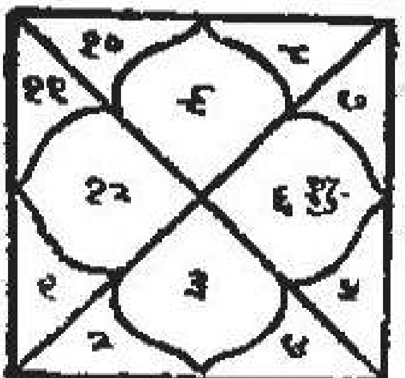

१०५७

दसवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित नीच के 'शुक्र' के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य तथा व्यवसाय के पक्ष में कठिनाइयों का अनुभव होता है। भाग्योन्नति में शत्रुपक्ष के कारण रुकावटें आती हैं।

सातवीं उच्च दृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने से माता, भूमि एवं भवन का सुख प्राप्त होता है तथा घर के भीतर प्रभाव भी बना रहता है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

धनु लग्न : एकादशभाव : शुक्र

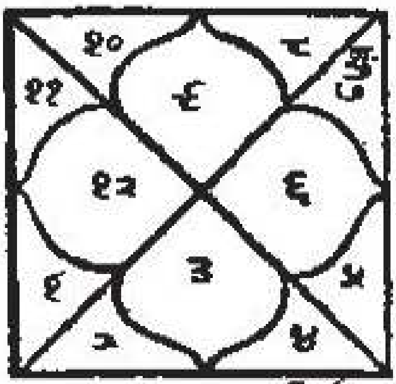

१०५८

ग्यारहवें भाव में स्वराशि में स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक की आमदनी में वृद्धि होती है तथा शत्रु पक्ष से विशेष लाभ मिलता है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से पंचम भाव को देखने से विद्या, बुद्धि के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है, परन्तु बाद में बड़ा गुणी, चतुर तथा विद्वान् भी बनता है। सन्तान-पक्ष से त्रुटिपूर्ण साथ प्राप्त होता है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

धनु लग्न : द्वादशभाव : शुक्र

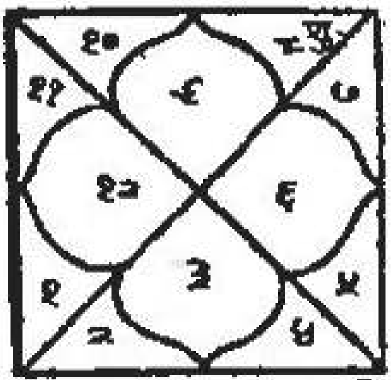

१०५९

बारहवें भाव में शत्रु 'मंगल' की राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी संबंधों से लाभ भी होता है। झगड़े तथा शत्रुओं के कारण कुछ परेशानी होती है, परन्तु अपनी चतुराई से लाभ भी उठाता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में षष्ठभाव को देखने से शत्रु-पक्ष पर पूर्ण प्रभाव स्थापित होता है। ऐसा व्यक्ति संघर्षपूर्ण जीवन बिताता है।

'धनु' लग्न में 'शनि'

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

धनु लग्न : प्रथमभाव : शनि

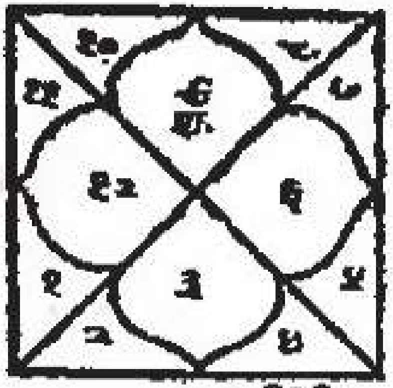

१०६०

पहले भाव में शत्रु 'गुरु' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौन्दर्य में कमी आती है। परिश्रम से धन तथा कुटुम्ब का सुख मिलता है। तीसरी दृष्टि से स्वराशि में तृतीय भाव को देखने से पराक्रम तथा भाई-बहिनों के सुख में वृद्धि होती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से सप्तम भाव को देखने से स्त्री तथा दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता मिलती है। दसवीं मित्रदृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता, राज्य

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

धनु लग्न : द्वितीयभाव : शनि

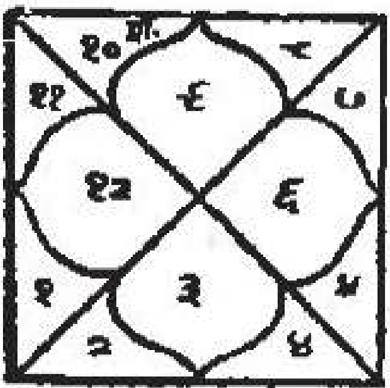

२०६१

दूसरे भाव में स्वराशि-स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक को धन तथा कुटुम्ब का पर्याप्त सुख प्राप्त होता है, परन्तु भाई-बहिन के सुख में कुछ कमी रहती है। तीसरी शत्रुदृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने से माता, भूमि तथा भवन का अल्प सुख मिलता है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व की वृद्धि होती है। दसवीं उच्चदृष्टि से एकादशभाव को देखने से आमदनी खूब रहती है तथा कभी-कभी आकस्मिक धन-लाभ भी होता है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

धनु लग्न : तृतीयभाव : शनि

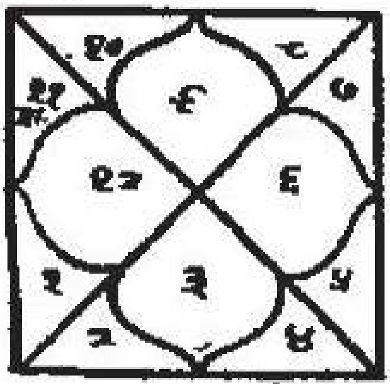

२०६२

तीसरे भाव में स्वराशि-स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक के पराक्रम में विशेष वृद्धि होती है तथा भाई-बहिन का सुख कुछ कमी के साथ मिलता है। तीसरी नीचदृष्टि से पंचम भाव को देखने से सन्तान-पक्ष से कष्ट होता है तथा विद्या-बुद्धि में कमी रहती है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से नवमभाव को देखने से भाग्य तथा यश की उन्नति होती है परन्तु धर्म में श्रद्धा कम रहती है। दसवीं शत्रुदृष्टि से द्वादश भाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों का सम्बन्ध भी लाभदायक सिद्ध नहीं होता।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

धनु लग्न : चतुर्थभाव : शनि

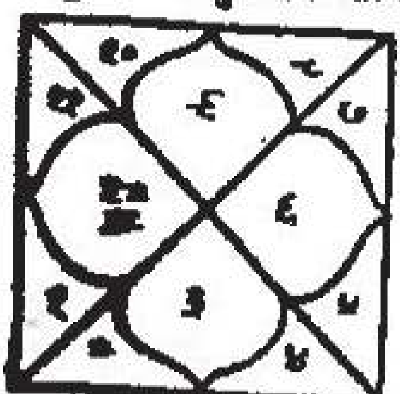

२०६३

चौथे भाव में शत्रु 'गुरु' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक को माता के सुख में कमी रहती है तथा भूमि, भवन का सामान्य सुख प्राप्त होता है। भाई-बहिन तथा कुटुम्ब का सुख भी असन्तोषजनक रहता है। तीसरी मित्रदृष्टि से षष्ठ भाव को देखने से शत्रु-पक्ष पर प्रभाव रहता है तथा झगड़ों से लाभ भी होता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से दशम भाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र की उन्नति होती है। दसवीं शत्रुदृष्टि से प्रथम भाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य में कमी आती है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

धनु लग्न : पंचमभाव : शनि

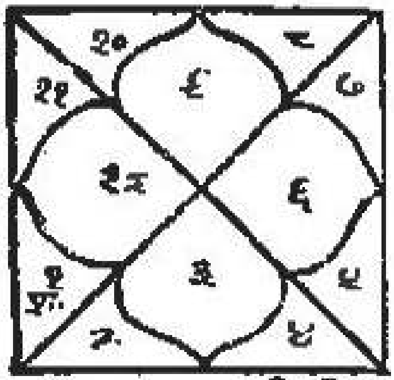

१०६४

पाँचवें भाव में शत्रु 'मंगल' की राशि पर स्थित नीच के 'शनि' के प्रभाव से जातक को सन्तान-पक्ष से कष्ट मिलता है तथा विद्या, बुद्धि के क्षेत्र में कमी रहती है। तीसरी मित्रदृष्टि से सप्तम भाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता मिलती है। सातवीं उच्चदृष्टि से एकादश भाव को देखने से आमदनी खूब रहती है। दसवीं दृष्टि से स्वराशि में द्वितीय भाव को देखने से कौटुम्बिक सुख तथा धन-संचय के लिए गुप्त युक्तियों का आश्रय लेना पड़ता है तभी सामान्य सफलता मिलती है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

धनु लग्न : षष्ठभाव : शनि

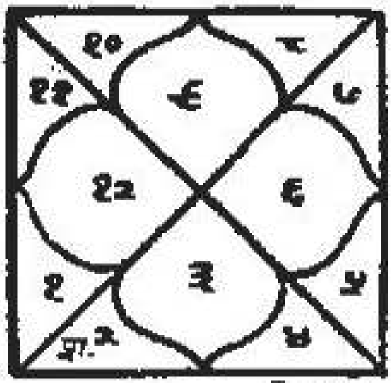

१०६५

छठे भाव में मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष पर भारी प्रभाव रखता है तथा झगड़ों से लाभ उठाता है। कुटुम्बियों से कुछ विरोध भी रहता है। तीसरी शत्रुदृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु में वृद्धि होती है, परन्तु पुरातत्व का लाभ कम होता है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से द्वादश भाव को देखने से खर्च अधिक रहता है। बाहरी संबंधों से भी हानि होती है।

दसवी दृष्टि से स्वराशि में तृतीय भाव को देखने से भाई-बहिनों से वैमनस्य रहता है, परन्तु पराक्रम की वृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति हिम्मती तथा पुरुषार्थी होता है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

धनु लग्न : सप्तमभाव : शनि

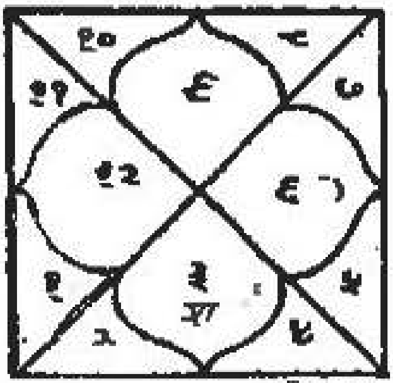

१०६६

सातवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक को स्त्री का लाभ तो होता है, परन्तु उससे सुख कम ही मिलता है, तथापि दैनिक व्यवसाय में पर्याप्त लाभ होता है। भाई-बहिन तथा कुटुम्बियों से अच्छे संबंध रहते हैं। तीसरी शत्रुदृष्टि से नवमभाव को देखने से धर्म तथा भाग्य के क्षेत्र में रुकावटें आती हैं।

सातवीं शत्रुदृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शरीर में कुछ कष्ट रहता है। दसवीं शत्रुदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि तथा भवन के सुख में कमी आ जाती है और उसे अपना स्थान छोड़कर परदेश में भी रहना पड़ता है।

'धनु' लग्न की कुण्डली में 'अष्टमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

धनु लग्न : अष्टमभाव : शनि

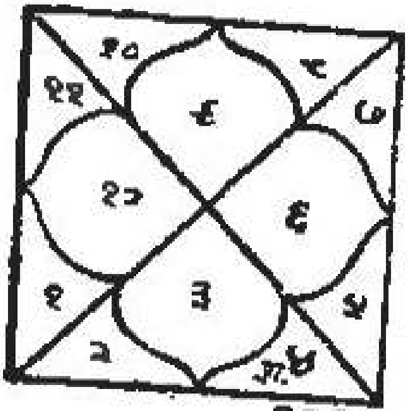

२०६७

आठवें भाव में शत्रु 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक की आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का भी लाभ होता है। दैनिक सुख, धन-संचय तथा भाई-बहिन के सुख में कमी रहती है। तीसरी मित्र-दृष्टि से दशम भाव को देखने से पिता राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलताएँ मिलती हैं।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में द्वितीयभाव को देखने से धन-कुटुम्ब का सामान्य सुख मिलता है। दसवीं नीच-दृष्टि से पंचम भाव को देखने से विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के पक्ष में कमी बनी रहती है।

'धनु' लग्न की कुण्डली में 'नवमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

धनु लग्न : नवमभाव : शनि

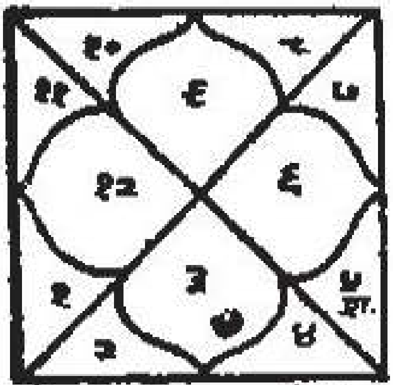

२०६८

नवें भाव में शत्रु 'सूर्य' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक को भाग्योन्नति एवं धर्म-पालन में बाधाएं आती हैं। धन-कुटुम्ब का सामान्य-सुख मिलता है। तीसरी मित्र तथा उच्च-दृष्टि से एकादशभाव को देखने से आमदनी खूब रहती है तथा कभी-कभी आकस्मिक धन-लाभ भी होता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में तृतीयभाव को देखने से भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। दसवीं मित्र-दृष्टि से षष्ठ भाव को देखने से शत्रुओं पर विजय प्राप्त होती है तथा झगड़े-झंझटों से लाभ होता है।

'धनु' लग्न की कुण्डली में 'दशमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

धनु लग्न : दशमभाव : शनि

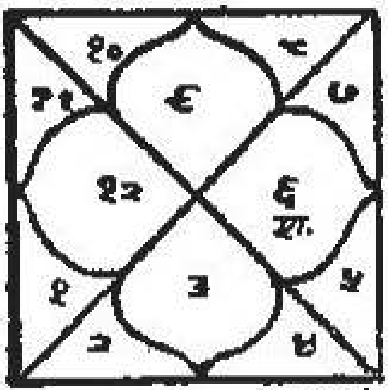

२०६९

दसवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक को पिता से सहयोग, राज्य से सम्मान तथा व्यवसाय से लाभ मिलता है। भाई-बहिनों के सुख तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। तीसरी शत्रु-दृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्ध भी असन्तोषजनक रहते हैं।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने से माता, भूमि एवं भवन के सुख में कमी रहती है। दसवीं मित्र-दृष्टि से सप्तम भाव को देखने से स्त्री-पक्ष से सुख तथा दैनिक व्यवसाय में सफलता की प्राप्ति होती है।

'धनु' लग्न की कुण्डली में 'एकादशभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

धनु लग्न : एकादशभाव : शनि

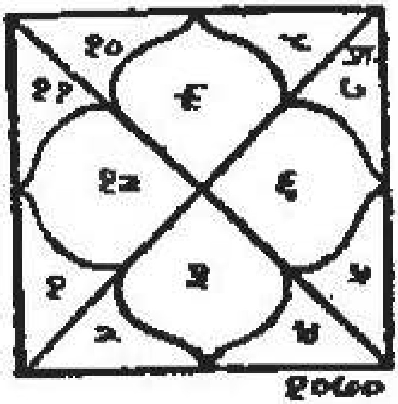

१०७०

ग्यारहवें भाव में मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक की आमदनी में विशेष वृद्धि होती है। कभी-कभी आकस्मिक धन-लाभ भी होता है। कुटुम्ब तथा भाई-बहिनों के सुख एवं पराक्रम में भी वृद्धि होती है। तीसरी शत्रु-दृष्टि से प्रथम भाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य में कमी आती है।

सातवीं नीच तथा शत्रु-दृष्टि से पंचम भाव को देखने से सन्तान से कष्ट मिलता है तथा विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में कमी रहती है। दसवीं शत्रु-दृष्टि से अष्टम भाव को देखने से आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ होता है परन्तु दैनिक जीवन में परेशानियों का अनुभव होता है।

'धनु' लग्न की कुण्डली में 'द्वादशभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

धनु लग्न : द्वादशभाव : शनि

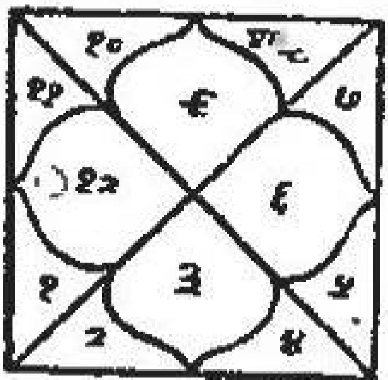

१०७१

बारहवें भाव में शत्रु 'मंगल' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों का संबंध भी असन्तोषजनक रहता है। धन-कुटुम्ब तथा भाई-बहिन के सुख में भी कमी रहती है। तीसरी दृष्टि से स्वराशि में तीसरे भाव को देखने से धन-कुटुम्ब का सामान्य सुख प्राप्त होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रु-पक्ष पर प्रभाव स्थापित होता है तथा गुप्त युक्तियों के सहारे लाभ भी मिलता है। दसवीं शत्रु-दृष्टि से नवम भाव को देखने से भाग्योन्नति में कठिनाइयाँ आती हैं तथा धर्म का पालन भी पूर्ण रूप से नहीं हो पाता।

'धनु' लग्न में 'राहु'

'धनु' लग्न की कुण्डली में 'प्रथमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

धनु लग्न : प्रथमभाव : राहु

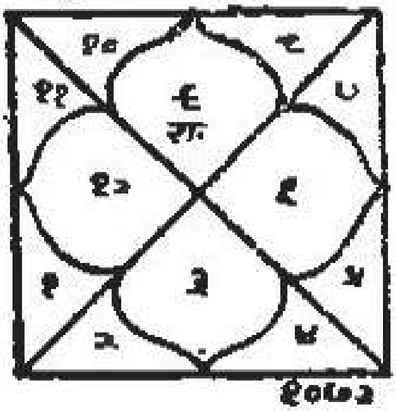

१०७२

पहले भाव में शत्रु 'गुरु' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौन्दर्य तथा स्वास्थ्य में कमी आती है। कभी-कभी कठिन शारीरिक कष्ट भी उठाना पड़ता है। ऐसा व्यक्ति देखने में सज्जन परन्तु भीतर से चालाक होता है।

'धनु' लग्न की कुण्डली में 'द्वितीयभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

धनु लग्न : द्वितीयभाव : राहु

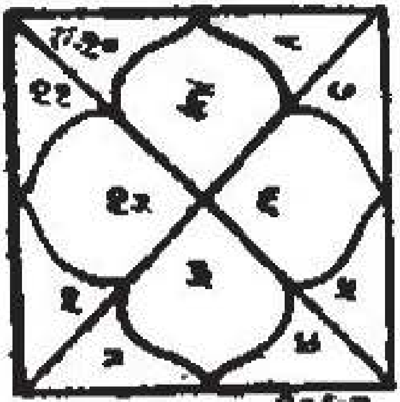

१०७२

दूसरे भाव में मित्र 'शनि' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक के धन तथा कुटुम्ब के सुख में कमी रहती है। कभी-कभी कौटुम्बिक कारणों से घोर संकटों का शिकार भी बनना पड़ता है।

उसे प्रायः ऋण लेकर अपना काम चलाना पड़ता है। अपनी कठिनाइयों पर वह गुप्त युक्तियों द्वारा विजय पाने का प्रयत्न करता है।

'धनु' लग्न की कुण्डली में 'तृतीयभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

धनु लग्न : तृतीयभाव : राहु

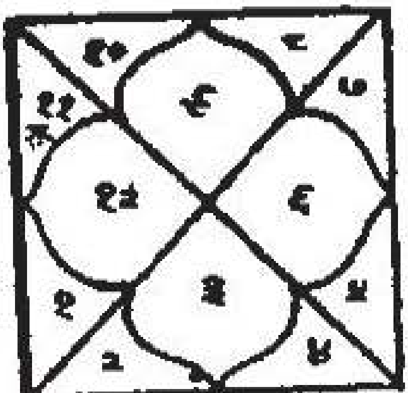

१०७४

तीसरे भाव में मित्र शनि की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक बड़ा हिम्मती तथा बहादुर होता है। भाई-बहिनों के साथ उसके सम्बन्ध सुखकर नहीं रहते।

उसे कभी-कभी घोर संकटों का सामना भी करना पड़ता है, परन्तु धैर्यवान् तथा साहसी होने के कारण उन्हें चुपचाप सहन कर लेता है।

'धनु' लग्न की कुण्डली में 'चतुर्थभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

धनु लग्न : चतुर्थभाव : राहु

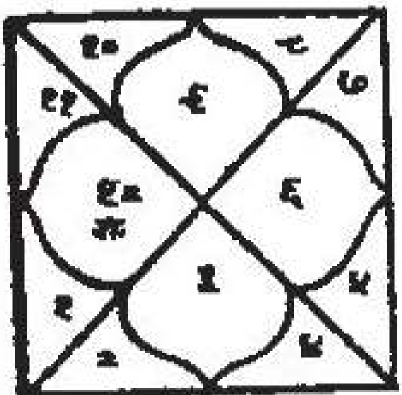

१०७५

चौथे भाव में शत्रु 'गुरु' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक को माता के सुख में बड़ी कमी रहती है। भूमि तथा भवन का सुख भी नहीं मिलता। कभी-कभी घोर मुसीबतें भी उठानी पड़ती हैं। धैर्य तथा गुप्त युक्तियों के बल पर वह संकटों का सामना करता रहता है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

धनुलग्न : पंचमभाव : राहु

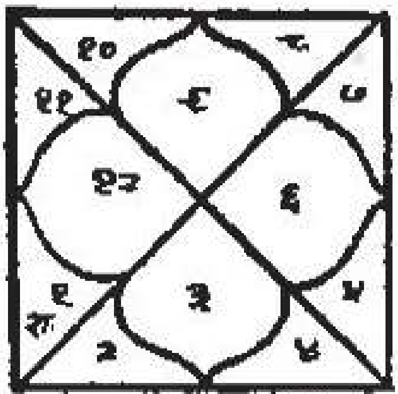

१०७६

पाँचवें भाव में शत्रु 'मंगल' की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक की सन्तान-पक्ष से कष्ट प्राप्त होता है तथा विद्याध्ययन में भी बड़ी कठिनाइयाँ तथा कमी रहती है। उसकी बोली में रूखापन रहता है। वह धैर्य तथा गुप्त युक्तियों के बल पर काम तो चलाता है, परन्तु चिन्ताओं से घिरा रहता है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

धनुलग्न : षष्ठभाव : राहु

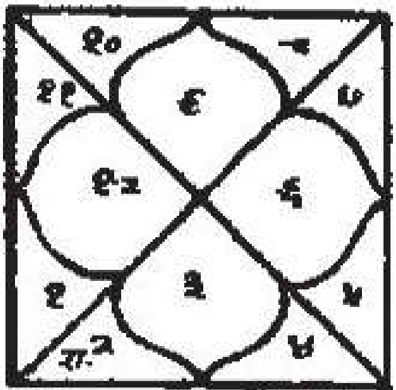

१०७७

छठे भाव में मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष पर अत्यन्त प्रभाव रखता है तथा चातुर्य एवं गुप्त युक्तियों के बल पर उन्हें परास्त करता रहता है।

ऐसा व्यक्ति बड़ा साहसी, बहादुर तथा धैर्यवान् होता है। वह मातृ-पक्ष को भी कुछ हानि पहुँचाता है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

धनुलग्न : सप्तमभाव : राहु

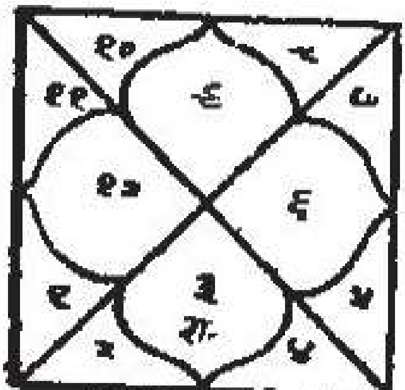

१०७८

सातवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित उच्च के राहु के प्रभाव से जातक को स्त्री-पक्ष की विशेष शक्ति मिलती है। उसके एक से अधिक विवाह भी हो सकते हैं। दैनिक आमदनी की वृद्धि के लिए वह अनेक उपायों का आश्रय लेता है। वह धनी तथा सुखी जीवन विताता है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

धनुलग्न : अष्टमभाव : राहु

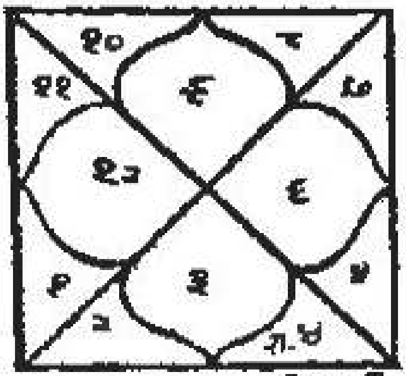
२०७९

आठवें भाव में शत्रु 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक के जीवन पर कई बार संकट आते हैं तथा मृत्यु-तुल्य स्थितियाँ बन जाती हैं। पेट में विकार रहता है। पुरातत्त्व की हानि होती है। ऐसा व्यक्ति परेशानियों से घिरा रहता है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

धनुलग्न : नवमभाव : राहु

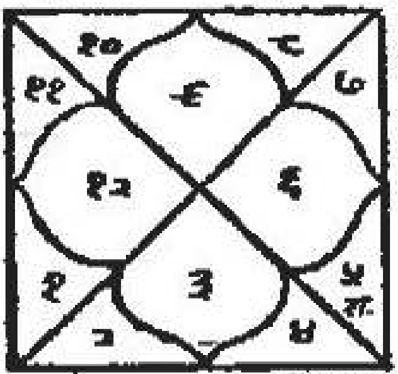
२०८०

नवें भाव में शत्रु 'सूर्य' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक की भाग्योन्नति में घोर संकट आते हैं। धर्म में उसकी आस्था नहीं होती। ऐसा व्यक्ति प्रायः अनीश्वरवादी होते हुए भी भाग्योन्नति के लिए अधिकाधिक परिश्रम करता तथा गुप्त युक्तियों का आश्रय लेता है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

धनुलग्न : दशमभाव : राहु

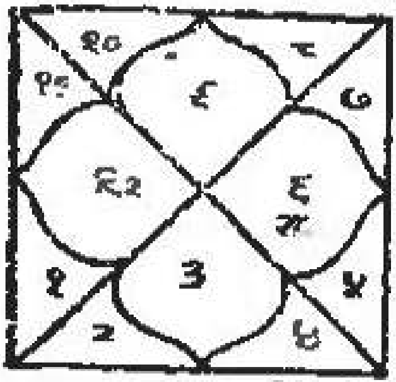
२०८१

दसवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक को पिता द्वारा परेशानी, राज्य द्वारा संकट तथा व्यवसाय में हानि का शिकार बनना पड़ता है। वह अपनी हिम्मत तथा गुप्त युक्तियों के बल पर आगे बढ़ने का प्रयत्न करता रहता है, परन्तु अधिक सफलता नहीं मिल पाती।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

धनुलग्न : एकादशभाव : राहु

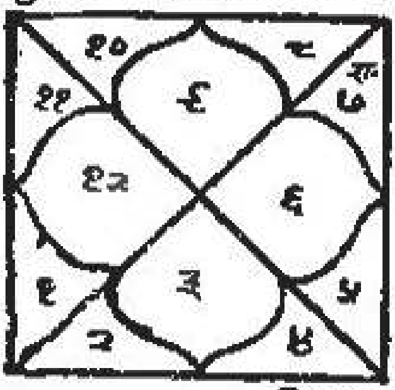
२०८२

ग्यारहवें भाव में मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक की आमदनी में पर्याप्त वृद्धि होती है। कभी-कभी कठिनाइयाँ भी आती हैं, परन्तु वह अपना धैर्य नहीं छोड़ता और हिम्मत से काम लेकर कठिनाइयों पर विजय प्राप्त कर लेता है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

धनुलग्न : द्वादशभाव : राहु

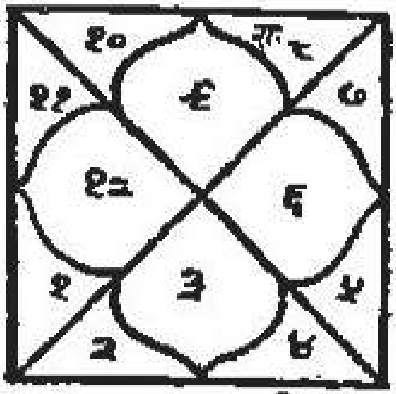

१०८३

बारहवें भाव में शत्रु 'मंगल' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्धों से भी कष्ट का अनुभव होता है। ऐसा व्यक्ति हिम्मती होने के कारण घबराता नहीं है तथा संकटों पर विजय पाने का प्रयत्न करता रहता है।

'धनु' लग्न में 'केतु'

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

धनुलग्न : प्रथमभाव : केतु

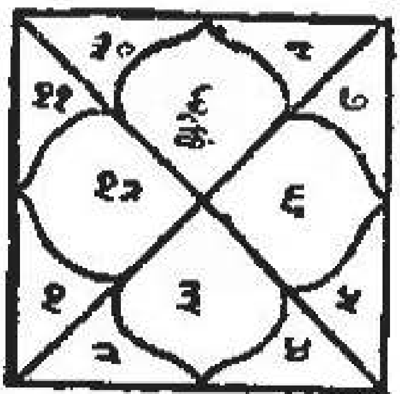

१०८४

पहले भाव में शत्रु 'गुरु' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक की शारीरिक शक्ति एवं आकार में तो वृद्धि होती है, परन्तु शारीरिक सौन्दर्य में कमी भी अवश्य आती है। वह जिद्दी तथा हठी स्वभाव का होता है।

ऐसा व्यक्ति सब कठिनाइयों का साहस के साथ मुकाबला करने वाला, परिश्रमी तथा धैर्यवान् होता है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

धनुलग्न : द्वितीयभाव : केतु

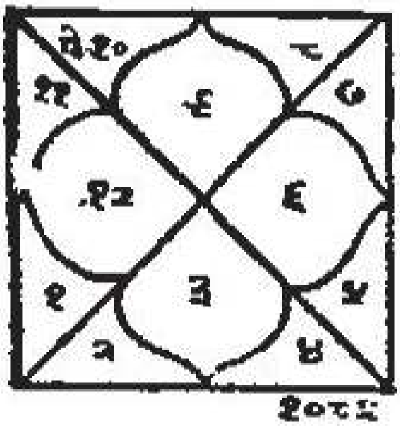

१०८५

दूसरे भाव में मित्र 'शनि' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक के कौटुम्बिक सुख में कमी रहती है तथा धन-संचय के लिए अत्यधिक परिश्रम करना पड़ता है। कभी-कभी उसे घोर आर्थिक संकटों में भी फंसना पड़ता है और प्राय: ऋण लेकर काम चलाना पड़ता है। ऐसा व्यक्ति बड़ा हिम्मती तथा धैर्यवान् होता है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

धनु लग्न : तृतीयभाव : केतु

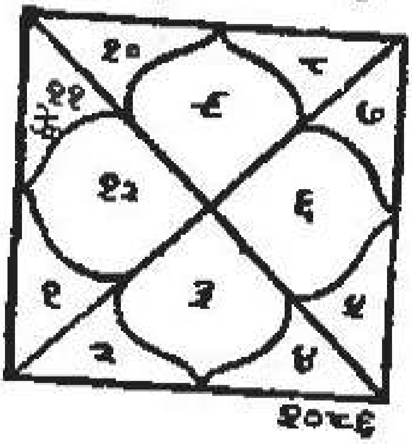

तीसरे भाव में मित्र 'शनि' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक के पराक्रम में अत्यधिक वृद्धि होती है, परन्तु भाई-बहिन के सुख में कमी तथा कष्ट का अनुभव होता है।

ऐसा व्यक्ति गुप्त युक्तियों का आश्रय लेने वाला, साहसी तथा कठिन परिश्रमी होता है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

धनु लग्न : चतुर्थभाव : केतु

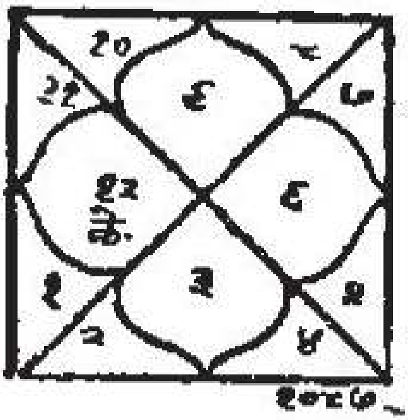

चौथे भाव में शत्रु 'गुरु' की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को माता के सुख में बड़ी हानि उठानी पड़ती है तथा मातृभूमि का वियोग भी सहना पड़ता है। भूमि तथा भवन का सुख भी प्राप्त नहीं होता। परन्तु ऐसा व्यक्ति बड़ा परिश्रमी, साहसी, धैर्यवान् तथा सन्तोषी होता है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

धनु लग्न : पंचमभाव : केतु

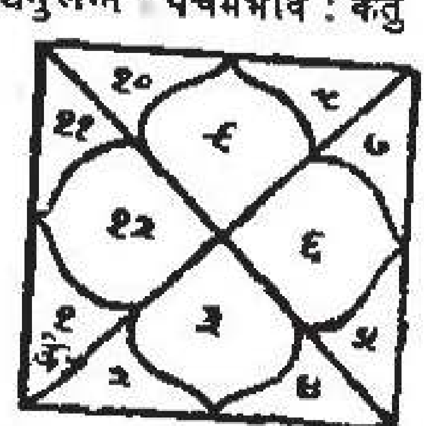

पाँचवें भाव में शत्रु 'मंगल' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक को सन्तान-पक्ष में बड़ी हानि का सामना करना पड़ता है तथा विद्याध्ययन में भी बड़ी कठिनाइयों के बाद अल्प सफलता मिलती है।

ऐसा व्यक्ति घोर परिश्रमी, जिद्दी तथा गुप्त युक्तियों का आश्रय लेने वाला होता है। वह सदैव चिन्तित भी बना रहता है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

धनु लग्न : षष्ठभाव : केतु

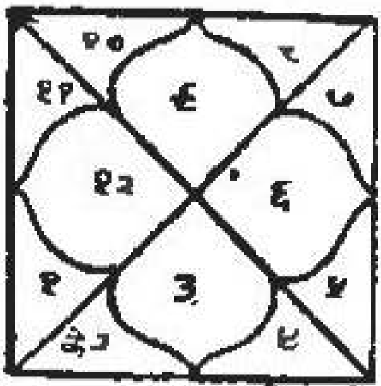

१०८६

छठे भाव में मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष पर विजय प्राप्त करता है तथा झगड़े-मुकदमे आदि से भी वह लाभ उठाता है।

महान संकट उपस्थित होने पर भी वह कभी हिम्मत नहीं हारता तथा बहादुरी के साथ मुकाबला करता हुआ उस पर विजय प्राप्त करता है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'केतु' का फलावेश

धनु लग्न : सप्तमभाव : केतु

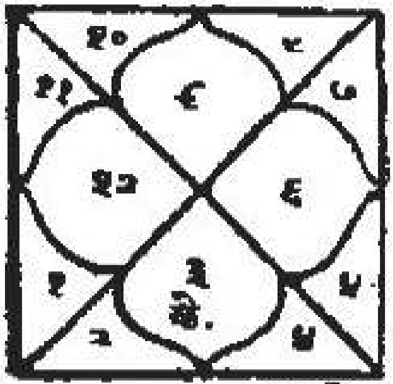

१०८७

सातवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित नीच के 'केतु' के प्रभाव से जातक को स्त्री-पक्ष में घोर हानि उठानी पड़ती है तथा दैनिक आमदनी के क्षेत्र में भी बड़ी कठिनाइयाँ आती रहती हैं।

वह धैर्य तथा साहस के साथ गृहस्थ जीवन को सुखी बनाने का प्रयत्न करता रहता है, परन्तु सफलता थोड़ी ही मिलती है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'केतु' का फलावेश

धनु लग्न : अष्टमभाव : केतु

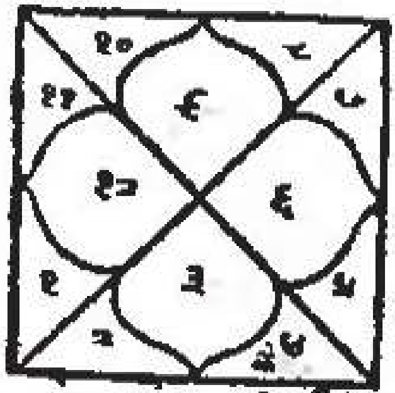

१०८८

आठवें भाव में शत्रु 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक के जीवन पर बड़े-बड़े संकट आते हैं तथा उसे मृत्यु-तुल्य कष्टों का सामना करना पड़ता है। पेट में विकार भी रहता है।

दैनिक जीवन में परेशानियाँ घनी रहती हैं। पुरातत्व की की हानि होती है। घोर परिश्रम करने पर भी सुख नहीं मिल पाता।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

धनु लग्न : नवमभाव : केतु

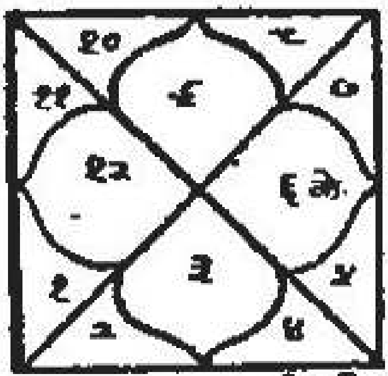

१०६३

नवें भाव में शत्रु 'सूर्य' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक की भाग्योन्नति में अत्यधिक बाधाएँ आती हैं। उन्हें दूर करने के लिए वह अनेक गुप्त युक्तियों तथा परिश्रम का सहारा लेता है, परन्तु आंशिक सफलता ही मिल पाती है। धर्म तथा ईश्वर में उसकी आस्था कम होती है। सदैव चिन्ताओं तथा असफलताओं का शिकार बना रहता है।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

धनु लग्न : दशमभाव : केतु

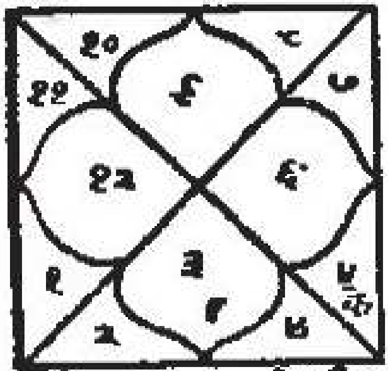

१०६२

दसवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक को कुछ कमियों के साथ पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सामान्य लाभ, सफलता, सुख, यश, सहयोग तथा सम्मान की प्राप्ति होती है। अत्यधिक परिश्रम तथा युक्ति-बल का आश्रय लेने पर भी विशेष उन्नति नहीं हो पाती।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

धनु लग्न : एकादशभाव : केतु

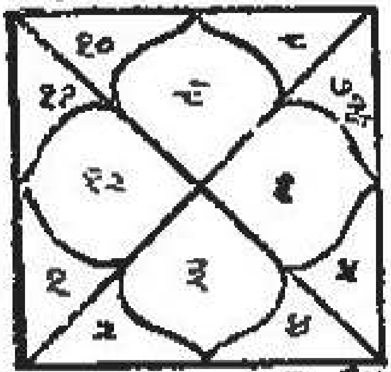

१०६४

ग्यारहवें भाव में मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक की आमदनी में अत्यधिक वृद्धि होती है। कभी-कभी संकटों का शिकार भी बनना पड़ता है, परन्तु उन पर वह अपनी गुप्त युक्तियों तथा कठोर परिश्रम के बल पर विजय प्राप्त कर लेता है। फिर भी पूर्ण सन्तोष नहीं मिल पाता।

'धनु' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

धनु लग्न : द्वादशभाव : केतु

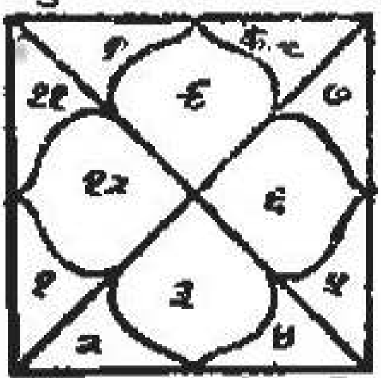

१०६५

बारहवें भाव में शत्रु 'मंगल' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है जिससे उसे बड़ी परेशानी तथा संकट उठाने पड़ते हैं।

बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से भी परेशानियां मिलती हैं। वह गुप्त युक्तियों, परिश्रम, धैर्य तथा हिम्मत के बल पर कठिनाइयों को दूर करने का प्रयत्न करता है, परन्तु अधिक सफल नहीं हो पाता।